आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

अक्तूबर 2023

क्रान्ति

मासिक

सहयोग राशि
30/- ₹

इस्लामोफ़ोबिया

संक्रमण का शिकार होती शिक्षण संस्थाएं



"उस सत्ता की क़सम
जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है!
बन्दा ईमान वाला नहीं होता
जब तक कि अपने भाई के
लिए भी वही चीज़ पसन्द न
करे जो वह स्वयं अपने लिए
पसन्द करता है।"

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

A Well Wisher

Jamiatul Mominat
Nagpur (MS)

Website Link :
www.kantimasik.com

संपादक
शिब्ली अरसलान
editorkantimasik@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि
एक प्रति 30/- रु॰ एक वर्ष 350/- रु॰
दो वर्ष 670/- रु॰ तीन वर्ष 950/- रु॰
चार वर्ष 1200/- रु॰ पांच वर्ष 1400/- रु॰
आजीवन रु॰ 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
+91 8920589292

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली - 110006 से मुद्रित।
फ़ोन: 9818799223
संपादक: शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 33 अंक 04 अक्तूबर 2023

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति
मासिक

इस अंक में

मूल प्रश्न 04
बाल-मन पर बौद्धिक आतंक
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
स्वयं से विश्वासघात
इनायत उल्लाह सुब्हानी

सौंदर्य बोध 11
मन डूबा तो सब डूबा
तबाना नूरी

मुख्य स्तंभ 13
संक्रमण का शिकार होती शिक्षण संस्थाएं
सुफ़ियान अहमद

अभिमत 16
क्या यही सच है ?
मुकेश भारद्वाज

समाधान 19
रोकना होगा यह संक्रमण
संपादन प्रभाग

कविता 23
एक बार फिर
देवांग दीक्षित "आज़ाद"

कीर्तिमान 24
चांद के पार
डॉ. प्रदीप कुमार

इतिहास का सच और सच का इतिहास 27
ज्ञान के स्वर्णिम युग का सिंहावलोकन
सुहैल के.के.

मंथन 31
ओटीटी : मनोरंजन या मनोविकार?
नईम अलहिन्दी

पर्यावरण 34
प्रदूषण के कारण घटती जीवन प्रत्याशा
जितेंद्र गौतम

सेहत 36
साधारण सिरदर्द नहीं है माइग्रेन
संपादन प्रभाग

करियर 38
ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स कर बनाएं एक शानदार करियर
संपादन प्रभाग

कहानी 43
कर्मों का फल
मुंशी प्रेमचंद

लघुकथा 47
ज्ञानियों की गति
ख़लील जिब्रान

आख़िरी पन्ना 48
दया सागर
संपादन प्रभाग

मूल प्रश्न



बाल-मन पर बौद्धिक आतंक

शिब्ली अरसलान

मुज़फ़्फ़रनगर के नेहा पब्लिक स्कूल की घटना हर उस व्यक्ति के लिए अत्यंत हृदयद्रावक और चिंताजनक है, जिसका हृदय अभी पूर्ण रूप से विषाक्त नहीं हुआ है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक़ यद्यपि स्कूल की शिक्षिका तृप्ता त्यागी द्वारा मासूम बच्चों को एक-एक करके अपने ही एक सहपाठी मुस्लिम छात्र को थप्पड़ लगवाने के मामले में पीड़ित छात्र के पिता इरशाद ने 'समझौता' कर लिया है। किसान नेता नरेश टिकैत ने बच्चों को गले मिलवाकर 'सौहार्द और मुहब्बत' का एक संदेश भी दे दिया है। परंतु इस घटना ने देश में नफ़रत की चल रही बयार पर हमारी चिंता बढ़ा दी है। क्या अब शिक्षण संस्थान और प्री-प्राईमरी स्कूल के अंदर तक नफ़रत के शूल बो दिए गए हैं? क्या अब मासूम कोमल ज़ेहनों को भी इस्लामोफोबिक करने की तैयारी है?



यदि खाप पंचायत के चौधरी नरेश टिकैत तृप्ता की 'अतृप्त भावना' और 'विकलांग मानसिकता' पर उसे भरी मजलिस में नसीहत देते हुए नफ़रत त्यागने की क़सम खिलाते तो 'सौहार्द' का कोई अर्थ होता। बच्चों को गले मिलाने का क्या मतलब है? बच्चों के बीच नफ़रत का ज़हर डालने की कोशिश तो उस 'अतृप्ता' ने की। या कम-अज़-कम जिन मासूम बच्चों से उस बदनसीब पीड़ित बच्चे को पिटवाया गया, उनके माता-पिता को खाप पंचायत में बुलाकर उनसे ये घोषणा करवाई जाती कि वे अपने बच्चों को किसी 'विकलांग मानसिकता' का शिकार बनने नहीं देंगे तो फिर 'भाईचारे' का सार्थक संदेश जाता।

40 सेकेंड के उस वायरल वीडियो में केजी क्लास के मासूम बच्चे अपने ही सहपाठी मुस्लिम छात्र को मारते नज़र आ रहे हैं, जबकि शिक्षिका मारने वाले बच्चों को प्रोत्साहित करती दिखती हैं। वीडियो में पीड़ित बच्चा रो रहा है और शिक्षिका के कहने पर साथी छात्र उसे थप्पड़ मार रहे हैं। कैमरा के पीछे के शख़्स से महिला शिक्षक कहती है "मैंने तो डिक्लेअर कर दिया है, जितने भी मोहम्मडन बच्चे हैं, इनके यहां चले जाओ..." उनकी बात पर कैमरा के पीछे वाला व्यक्ति सहमति ज़ाहिर करता है। मुस्लिम छात्र को मारने के बाद एक बच्चा बैठता है तो शिक्षक उससे कहती हैं, 'क्या तुम मार रहे हो? ज़ोर से मारो ना।' फिर वो पूछती हैं, 'चलो अब किसका नंबर है?' पीड़ित छात्र के रोते रहने के बीच वो कहती हैं, 'अबकी बार कमर पर मारो... चलो, मुंह पे न मारो अब मुंह लाल हो रहा है, कमर पे मारो सारे। इस वायरल वीडियो में उक्त मज़लूम मासूम छात्र पर पड़ने वाला हर थप्पड़ हमारे मुंह पर थप्पड़ है। हमारे सामाजिक ताने-बाने, 'ऐतिहासिक भाई-चारे' के गुणगान और 'मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था' पर झन्नाटेदार तमाचा है। बहुत

मुश्किल है उस वीडियो को पूरा देख पाना।

इस्लामोफ़ोबिया का बौद्धिक आतंक, 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' के नाम पर यूरोप से निकल कर हमारे विश्वविद्यालय और कॉलेज में कुछ वर्ष पहले ही आ गया था, मगर ये इतनी जल्दी स्कूलों तक में घुस जायेगा, इसका अंदाज़ा नहीं था। कुछ वर्ष पहले प्रकाशित किताब 'मदरिंग अ मुस्लिम' के मुताबिक़ भारत में बढ़ते इस्लामोफ़ोबिया के कारण नामी स्कूलों में मुस्लिम बच्चों को उनकी धार्मिक पहचान के आधार पर निशाना बनाया जा रहा है। लेखिका नाज़िया इरम ने इस किताब के लिए 12 शहरों में 145 परिवारों और दिल्ली के 25 नामी स्कूलों में पढ़ने वाले 100 बच्चों से बात की। बीबीसी के साथ एक विशेष बात-चीत में लेखिका कहती है, "अपने शोध के दौरान मैं हैरान रह गई। मैंने सोचा नहीं था कि इन उच्चवर्गीय स्कूलों में ऐसा हो रहा है...पांच और छह साल के बच्चे कहते हैं कि उन्हें पाकिस्तानी या आतंकवादी कहा जा रहा है उनके सहपाठियों द्वारा"

इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि इस्लामोफ़ोबिया सामूहिक सतह पर फैल रहा है, अतः इसका उपचार भी सामूहिक सतह पर करना होगा। मुसलमान और दूसरे समुदायों में वो लोग जो नफ़रत की वर्तमान लहर से चिंतित हैं, उन्हें साथ आकर ये संदेश देना होगा कि नफ़रत हमारी नस्लों के लिए बेहद ख़तरनाक है, ये हमारी सारी पूंजी का विनाश कर देगी। देश की नई पीढ़ी में देश के दूसरे बड़े समुदाय के प्रति दुर्भावना भर देना, किसी भी स्थिति में देश हित में नहीं होगा। इसके लिए राजनीतिक महागठबंधन की तर्ज़ पर 'सामाजिक महागठबंधन' बनाकर संगठित एवं सुनियोजित संघर्ष की आवश्यकता है। मीडिया और सोशल मीडिया के ज़हर का संज्ञान लेना होगा।

लेखिका ने उक्त किताब में ये बताया है कि हाई फाई स्कूलों के मुस्लिम बच्चों से कौन-कौन से सवाल स्कूल कैम्पस और क्लास रूम में किए जाते हैं या क्या-क्या टिप्पणियां उनके ऊपर की जाती हैं।

- क्या तुम मुसलमान हो? मैं मुसलमानों से नफ़रत करता हूं।
- क्या तुम्हारे मां-बाप घर पर बम बनाते हैं?
- क्या तुम्हारे पापा तालिबान में हैं?
- वह पाकिस्तानी है।
- वह आतंकवादी है।

इन सवालों और टिप्पणियों से कोई भी सहज अंदाज़ा लगा सकता है कि इस्लामोफ़ोबिया का ज़हर स्कूलों में किस गहराई तक सरायत कर चुका है।

भारत में इस्लामोफ़ोबिया के पीछे कारण क्या है? इस पर अधिक चिंतन-मंथन की आवश्यक्ता नहीं है। इस्लामोफ़ोबिया के वैश्विक लहर का प्रभाव, भारत में इस्लाम विरोधी राजनीतिक विचारधारा, मुसलमानों के अंदर पायी जाने वाली 'ऐकला चलो रे' की प्रवृत्ति और सच्ची धार्मिकता का भाव, ये हैं इस्लामोफ़ोबिया के मूल कारण।

सबसे बड़ा सवाल ये है कि इसका उपचार एवं समाधान क्या है?

इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि इस्लामोफ़ोबिया सामूहिक सतह पर फैल रहा है, अतः इसका उपचार भी सामूहिक सतह पर करना होगा। मुसलमान और दूसरे समुदायों में वो लोग जो नफ़रत की वर्तमान लहर से चिंतित हैं, उन्हें साथ आकर ये संदेश देना होगा कि नफ़रत हमारी नस्लों के लिए बेहद ख़तरनाक है, ये हमारी सारी पूंजी का विनाश कर देगी। देश की नई पीढ़ी में देश के दूसरे बड़े समुदाय के प्रति दुर्भावना भर देना, किसी भी स्थिति में देश हित में नहीं होगा। इसके लिए राजनीतिक महागठबंधन की तर्ज़ पर 'सामाजिक महागठबंधन' बनाकर संगठित एवं सुनियोजित संघर्ष की आवश्यकता है। मीडिया और सोशल मीडिया के ज़हर का संज्ञान लेना होगा।

धर्माचार्यों को 'एक स्रष्टा, एक परिवार' की बुनियाद पर सच्ची धार्मिकता के प्रचार के लिए एक मंच पर आना होगा। आम जनमानस को ये बताना होगा कि धर्म से डरने की आवशयकता नहीं है। धर्म की मूल शिक्षा एक है। ईश-भक्ति, ईश-परायंता, परलोक में मोक्ष की प्राप्ति, संसार में इंसाफ़, बराबरी, शोषण-मुक्त, प्रेम तथा दया भाव से युक्त सामाजिक जीवन, ये हैं धर्म की मूल शिक्षाएं।

याद रहे एक सच्चा ईश-परायण धार्मिक समाज ही सांप्रदायिक ज़हर और इस्लामोफ़ोबिक लहर का इलाज है। 'धर्म के नाम पर' फैलाई जा रही नफ़रत का वास्तविक एवं टिकाऊ उपचार तब मुम्किन है जब धर्म समाज में काम करता नज़र आयेगा। ■■

“दो आंखें ऐसी हैं
जिनको नरक की आग नहीं छू सकती—
एक वह आंख
जो ईश्वर के भय से रो पड़ती हो और
दूसरी वह आंख
जिसने ईश्वर के मार्ग में पहरा
देते हुए रात व्यतीत की हो।”

(हदीस: तिरमिज़ी)



A Well Wisher

- Md. Shabbir (Hyderabad)
- Md. Tahir (Hyderabad)
- Md. Tahir Zafar (Jharkhand)

स्वयं से विश्वासघात



चिंतन



इनायत उल्लाह सुब्हानी

"ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियां फैला दीं। ईश्वर का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपनी मांगें रखते हो। और नाते-रिश्तेदारों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही ईश्वर तुम्हारी निगरानी कर रहा है।" (क़ुरआन, 4:1)

आज का इन्सान हो या कल का, वह ईश्वर की दी हुई सारी नेमतों से दिल खोलकर फ़ायदा उठाता है और उससे आनन्दित होता है, मगर जब उसके भेजे हुए दीन (धर्म), और उसके द्वारा उतारे गए ग्रन्थ पवित्र क़ुरआन को मानने की बात आती है, तो उसके दिल व दिमाग़ के सारे दरवाज़े बन्द हो जाते हैं। वह अपने अन्दर उसके लिए कोई आमादगी नहीं पाता।

वह कहता है, यह तो मुसलमानों की किताब है ! हमारे लिए इस किताब में क्या रखा है ? कहने वाले इस तरह की बातें क्यों कहते हैं ? शायद इसकी वजह यह है कि उन्होंने इस्लाम और क़ुरआन की सही तस्वीर नहीं देखी। उन्हें इस्लाम धर्म और क़ुरआन की वह तस्वीर देखने को मिली, जिसमें उन्हें ख़ुदा की रहमत और मुहब्बत के जलवे नज़र नहीं आए। उन्हें इस धर्म में ईश्वर की महानता के वे जलवे नज़र नहीं आए, जो जलवे उन्हें सूरज की किरणों, चांद की चांदनियों, तारों की झुरमुटों, सुबह के झोंकों और बारिश की बूंदों में नज़र आए।

लिहाज़ा इन सारी नेमतों के बारे में तो उन्हें यह यक़ीन होता है कि यह उनके पालनहार की दी हुई नेमतें हैं, मगर उस दीन और उस क़ुरआन के बारे में यह समझना उनके लिए मुश्किल होता है कि यह उनके पालनहार का भेजा हुआ धर्म और उनके रब की भेजी हुई किताब है। ऐसा क्यों है ? इसके कई कारण हो सकते हैं।

इसकी एक वजह तो यह हो सकती है कि इस्लाम धर्म और क़ुरआन के रूप में जो नेमत हासिल होती है, वह सीधे तौर पर नहीं हासिल होती, बल्कि किसी माध्यम से हासिल होती है, जबकि दूसरी सारी नेमतें ऐसी होती हैं, जिनके और इन्सान के बीच कोई दूसरा माध्यम नहीं होता, इन्सान सीधे तौर पर उन्हें अपनी आंखों से देखता है, भौतिक रूप में उन्हें महसूस करता है और सीधे तौर पर उनसे लाभान्वित होता है। इस्लाम और क़ुरआन के बारे में अक्सर ऐसा होता है कि इन्सान इस नेमत को शक व शुब्हे की निगाह से देखता है और उससे दूर हो जाता है। इस्लाम और क़ुरआन का मामला ज़्यादातर ऐसा ही रहा है, लोगों

ने इस सिलसिले में अपनी बुद्धि का कम इस्तेमाल किया है, स्वार्थियों और आराजक तत्वों के झूठे प्रोपेगन्डों का असर ज़्यादा लिया है।

इस्लाम और क़ुरआन से बेपरवाई की एक दूसरी वजह यह भी हो सकती है कि यह नेमत ऐसी होती है, जो न हाथों से छुई जा सकती है, न आंखों से देखी जा सकती है, बल्कि यह दिल व दिमाग़ से समझी और महसूस की जाती है, और दिल व दिमाग़ को सही तौर से इस्तेमाल करना और किसी मामले में सही नतीजे तक पहुंचना सबके बस की बात नहीं होती।

बुनियादी तौर पर सारे इन्सान अल्लाह के बन्दे और उसकी रचना हैं, इस हैसीयत से वह अल्लाह की निगाह में बराबर हैं और उसकी सारी नेमतों में बराबर से शरीक हैं। इसी प्रकार इन्सान चाहे वह हिन्दू हों या पारसी, यहूदी हों या ईसाई या मुस्लिम, सब एक मां-बाप, यानी हज़रत आदम और हज़रत हव्वा की सन्तान हैं, इस प्रकार वह मुस्लिम हों या ग़ैर मुस्लिम मर्द हों या औरत, सब आपस में भाई-भाई या भाई-बहन हैं।

एक तीसरी वजह यह भी हो सकती है कि उसकी लज़्ज़त और उसकी बरकत फ़ौरन हासिल नहीं होती, वजह यह है कि इस्लाम एक ऐसी जीवन व्यवस्था है, जो सम्पूर्ण जीवन पर हावी है, और जब तक पूरी ज़िन्दगी इस रंग में रंग न जाए, उसकी लज़्ज़त पाना, और उसकी बरकतों से मालामाल होना मुम्किन नहीं होता, उसके लिए बहुत कुछ मेहनत और परिश्रम करना होता है। विभिन्न प्रकार की क़ुर्बानियां देनी होती हैं। इम्तेहान और परीक्षण के विभिन्न चरणों से गुज़रना होता है।

हिन्दू भाइयों या जो लोग मुसलमान नहीं हैं उनको क्या कहा जाए? यहां तो हालत यह है कि वह मुसलमान जिनको नेमते-इस्लाम और नेमते-क़ुरआन अपने बुज़ुर्गों से विरासत में मिली है, वह भी उसकी महानता से अनभिज्ञ हैं। वह मुसलमान होते हुए भी इस्लाम की लज़्ज़त से बेख़बर और क़ुरआन की रोशनी से अपरिचित रहते हैं।

दुनिया को यह जानना चाहिए कि ये दीने-इस्लाम (इस्लाम धर्म) मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि सारे इन्सानों के लिए आया है, यह क़ुरआन पाक मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि सारे इन्सानों के लिए उतारा गया है।

बिल्कुल इसी तरह जिस तरह सूरज की रोशनी और चांद की चांदनी सिर्फ़ मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि सारे इन्सानों के लिए होती है, यह अलग बात है कि कौन इस नेमत की क़दर करता है और कौन नाक़दरी करता है।

यह इस्लाम उन लोगों का भी है, जिन्होंने इसे क़ुबूल किया और उन लोगों का भी है जिन्होंने इसे ठुकरा दिया। यह पवित्र क़ुरआन उन लोगों का भी ग्रंथ है जिन्होंने उसे पहचाना और सीने से लगाया और उन लोगों का भी ग्रन्थ है जिन्होंने उसे ठुकरा दिया और उससे मुंह फेर लिया।

जिस समय पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) का आगमन हुआ और पवित्र क़ुरआन अवतरित हुआ, और आपने इस्लाम का आमंत्रण दिया, उस समय पवित्र क़ुरआन का पहला संबोधन ग़ैर-मुस्लिम और मूर्तिपूजक समाज से था, फिर यह क्योंकर मुम्किन था कि उसकी शिक्षाओं में हिन्दू-मुस्लिम या मुस्लिम या ग़ैर-मुस्लिम का भेदभाव होता?

बुनियादी तौर पर सारे इन्सान अल्लाह के बन्दे और उसकी रचना हैं, इस हैसियत से वह अल्लाह की निगाह में बराबर हैं और उसकी सारी नेमतों में बराबर से शरीक हैं। इसी प्रकार इन्सान चाहे वह हिन्दू हों या पारसी, यहूदी हों या ईसाई या मुस्लिम, सब एक मां-बाप, यानी हज़रत आदम और हज़रत हव्वा की सन्तान हैं, इस प्रकार वह मुस्लिम हों या ग़ैर-मुस्लिम मर्द हों या औरत, सब आपस में भाई-भाई या भाई-बहन हैं।

ईश्वर ने अपनी प्रिय पुस्तक क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में इस हक़ीक़त की व्याख्या कर दी है, और उसके

यह इस्लाम उन लोगों का भी है, जिन्होंने इसे क़ुबूल किया और उन लोगों का भी है जिन्होंने इसे ठुकरा दिया। यह पवित्र क़ुरआन उन लोगों का भी ग्रंथ है, जिन्होंने उसे पहचाना और सीने से लगाया और उन लोगों का भी ग्रन्थ है' जिन्होंने उसे ठुकरा दिया और उससे मुंह फेर लिया। बिल्कुल इसी तरह जिस तरह सूरज की रोशनी और चांद की चांदनी सिर्फ़ मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि सारे इन्सानों के लिए होती है, यह अलग बात है कि कौन इस नेमत की क़दर करता है और कौन नाक़दरी करता है।

नतीजे में इन्सान की जो ज़िम्मेदारी होती है, उससे भी सचेत कर दिया है-

"ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और दोनों से बहुत-से पुरुष और स्त्रियां फैला दीं। ईश्वर का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपनी मांगें रखते हो। और नाते-रिश्तेदारों का भी तुम्हें ख़याल रखना है। निश्चय ही ईश्वर तुम्हारी निगरानी कर रहा है।'' (क़ुरआन, 4:1)

पवित्र क़ुरआन कभी भी ग़ैर-मुस्लिमों से नफ़रत करना नहीं सिखाता, इसके विपरीत वह सारे इन्सानों को एक दूसरे का भाई बताता है। एक ज़माना था कि इस्लाम सूरज की रोशनी, और चांद की चांदनी की तरह देखते-देखते पूरी दुनिया में फैल गया, इस तेज़ी के साथ पूरी दुनिया में उसके फैल जाने की इसके अलावा और कोई वजह न थी कि उसने दुनिया को शक्ति एवं प्रेम और सम्मान और स्वतन्त्रता का संदेश दिया। उस वक़्त सारी मानवता ज़ुल्म और अन्याय की चक्की में पिस रही थी, अत्यंत बेबसी के साथ कराह रही थी, इस्लाम ने उन अत्याचारियों के अत्याचार और फ़सादियों के फ़साद से मुक्ति दिलाई।

शासक वर्ग के अलावा हर इन्सान ग़ुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, इस्लाम ने वह सारी बेड़ियां काट दीं, और



हर इन्सान को उसकी खोयी हुई आज़ादी वापस दिलाई। ईश्वर ने हर इन्सान को इज़्ज़त की चादर पहनाई है, चाहे वह, किसी भी धर्म जाति या संप्रदाय का हो। पवित्र क़ुरआन का स्पष्ट ऐलान है-

"हमने आदम की संतान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी और अच्छी पाक चीज़ों से उन्हें रोज़ी दी और अपने पैदा किए हुए बहुत से प्राणियों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।'' (क़ुरआन, 17:70)

स्वार्थी और निर्दयी अत्याचारियों के अत्याचार से वह चादर तार-तार हो चुकी थी, इस्लाम ने आदम की औलाद को वह क़ीमती चादर फिर से पहना दी, इस तरह ज़ुल्म व ज़्यादती के पैरों से रौंदी और कुचली हुई मानवता दुबारा जीवन की महानता से परिचित हो गयी, और दुबारा जीवन की शक्तियों से माला-माल हो गयी। इस्लाम को अगर कोई अपने लिए ख़तरा समझ रहा है तो यह उसकी ग़लतफ़हमी है बल्कि सही बात यह है कि उसकी ख़ुदफ़रेबी है, ईश्वर का भेजा हुआ दीन (धर्म) किसी भी क़ौम, किसी भी देश के लिए ख़तरा नहीं हो सकता।

आज जिन भयानक और बर्बाद कर देने वाले ख़तरों की आंधियां चल रही हैं, और जिन मुसीबतों के बादल सारी मानवता के सरों पर मंडरा रहे हैं, इन सारे ख़तरों, और इन सारी बलाओं से निकलने का मात्र अकेला रास्ता यही इस्लाम है। इस दुनिया को बनाने-सजाने वाले ख़ुदा ने, और इसमें इन्सान को बसाने वाले मेहरबान रब ने इस्लाम धर्म को अपने बन्दों को किसी ख़तरे में डालने के लिए नहीं भेजा है, बल्कि उन्हें अपमान और तिरस्कार से निकाल कर सम्मान और सफलता से हमकिनार करने के लिए भेजा है। कहने वाले ने कितनी सही बात कही है-

ख़ुद फ़रेबी की ये दीवार अगर गिर जाती,
आज इन्सान के दामन में सितारे होते।

"कमज़ोर और विधवा महिला और मुहताज की सहायता करने के लिए दौड़-धूप करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है या रात्रि में खड़े रहने वाले इबादतगुज़ार या दिन में रोज़ा रखने वाले की तरह है।"

(हदीस: मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने-माजा)



A Well Wisher

Dr. Rayeesa Fatima (Hyderabad)
Firdous Akhtar (Hyderabad)
Firoz Ahmad (Mumbai)
Firoz Churiwala (Mumbai)

मन डूबा तो सब डूबा



सौंदर्य बोध



तबाना नूरी

मौजूदा दौर में दिन प्रतिदिन बेरोज़गारों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हो रही है और दूसरी ओर रोज़गार के अवसरों में कमी आना भी एक गंभीर समस्या है और हमारे देश के लिए चिन्ता का विषय है। इस मुश्किल भरे दौर में जीवन और करियर को सजाना-संवारना सहज नहीं है। महत्वाकांक्षाएं भला किसके मन में नहीं पलती? आज हर कोई अपने आपको सफल मक़ाम पर स्थापित करने की ललक रखता है। मगर क्या उस मक़ाम पर स्थापित हो पाना इतना सहज है?

यक़ीनन वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है या यूं कहा जाए कि प्रतिस्पर्धा एक चुनौती है। यह एक तरह की प्रतियोगिता है। आज 'नम्बर वन' बनने की कोशिश कौन नहीं करता। हर युवा अपनी उन्नति एवं प्रगति का स्वप्न तो देखता ही है और दिन-प्रतिदिन सफलता की सीढ़ियां भी चढ़ते जाना चाहता है।

सच तो यह है कि युवाओं की असीम महत्वाकांक्षा ने ही प्रतिस्पर्धा को चुनौतीपूर्ण बनाया है। यदि मन में प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित नहीं हुई होती तो क्या कोई अपनी योग्यता एवं प्रतिभा का समुचित उपयोग कर सकता था? अपनी क्षमता और सामर्थ्य तथा ऊर्जा शक्ति को रचनात्मक दिशा दी जा सकती है। कहने का आशय यह है कि स्वस्थ प्रतिस्पर्धा ही प्रगति का राजमार्ग है।

सच तो यह है कि करियर जीवन की वह आधारशिला है, जिस पर सुखद भविष्य की बुनियाद रखी जाती है। जब बुनियाद सुदृढ़ व मज़बूत हो, तो तब भविष्य की इमारत की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह न लगेगा और करियर को आयाम देना मुश्किल न होगा। इसलिए करियर के चयन में आप किसी प्रकार की जल्दबाज़ी या हड़बड़ाहट न दिखाएं बल्कि ठंडे दिमाग़ से सोचें। हर पहलू पर सोच-विचार करने के बाद ही निर्णय लें किन्तु निर्णय लेने से पूर्व यह ध्यान में अवश्य रखें कि आपने जिस करियर का चयन किया है, क्या वह आपकी रुचि, रुझान व लगाव के अनुरूप है? कहीं यह आपकी योग्यता, प्रतिभा एवं क्षमता के विपरीत तो नहीं? क्या आप उस क्षेत्र विशेष के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी रखते हैं ? उस क्षेत्र में आप क्या संभावनाएं देखते हैं?

प्रत्येक मनुष्य में किसी क्षेत्र विशेष पर गहरी पकड़ होती है, जिस पर उसका

रुझान व लगाव अटूट होता है और रुझान के अनुरूप कार्य करने से सफलता लगभग तय है। अतः करियर चयन में सजगता दिखाएं। करियर में विकल्प का चयन करने के पश्चात एक सुस्पष्ट कार्य-योजना ज़रूर बनाएं, क्योंकि सही व स्पष्ट कार्य-योजना ही सफलता की प्रथम सीढ़ी है। योजनाबद्ध ढंग से कार्य करना वह उत्तम तरीक़ा है, जिससे बेहतर परिणाम की आशा अपेक्षापूर्ण होती है और परिश्रम को समुचित दिशा मिल जाती है।

बहरहाल, यह संभव है, यदि आप अपने अंदर लक्ष्य प्राप्ति की अटूट चाहत पैदा करें। उद्देश्य तक पहुंचने की प्रबल इच्छाशक्ति को विकसित करें। उसमें संकल्प का बीज बोएं। फिर मेहनत रूपी जल से उसे अनवरत सींचें। धैर्य के साथ फलने-फूलने की प्रतीक्षा भी अनिवार्य है। अतः सुखद भविष्य की आशा-आकांक्षा मन में संजोकर रखें। किसी मनुष्य की प्रगति एवं उन्नति के लिए उसकी प्रबल आकांक्षा व अभिलाषा ही संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। जीवन को एक उद्देश्य मिल जाता है। आप पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ लक्ष्य प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहें।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जी तोड़ परिश्रम करने के बावजूद असफलता ही हाथ लगती है। सच तो यह है कि जीवन में हार-जीत लगी ही रहती है। इसलिए असफलता मिलने पर कभी भी निराश व हताश नहीं होना चाहिए, बल्कि ऐसे अवसर पर साहस एवं सहनशीलता का परिचय देना चाहिए, अन्यथा करियर को सजाना, संवार पाना मुश्किल हो जाएगा। कहते हैं 'मन डूबा तो नाव डूबी', इसलिए असफलता मिलने पर हाथ पर हाथ रख कर न बैठें अपितु विषम परिस्थितियों में भी संघर्ष करें।

यदि आप किसी प्रतियोगिता में भाग लेने या साक्षात्कार देने जा रहे हैं या फिर व्यवसाय करने का मन बनाए हुए हैं, मगर आप यह सोचेंगे कि मुझ से भी ज़्यादा पढ़े-लिखे व योग्य, प्रतिभावान तथा क्षमता वाले व्यक्ति इसमें शामिल हैं, इसलिए मेरी असफलता तो सुनिश्चित है तो निश्चित रूप से आप कभी सफल नहीं हो पाएंगे। आप अपनी योग्यता, प्रतिभा, क्षमता और सामर्थ्य पर संदेह मत कीजिए, बल्कि सदैव आशावादी दृष्टिकोण अपनाए रखिए।



आशावादी दृष्टिकोण संजीवनी बूटी के समान है, जिससे हमारी कार्यशैली एवं कार्यक्षमता और कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है, साथ ही कार्य के प्रति समर्पण की भावना का विकास भी होता है और कार्य को बेहतर ढंग से किया जा सकता है। इसलिए आप जो भी कार्य हाथ में लें, उसे पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी एवं आत्मविश्वास के साथ करें और विश्वास रखें कि आपकी सफलता सुनिश्चित है, लेकिन सतत प्रयत्नशील रहें, हिम्मत न हारें।

इसके अलावा किसी भी कार्य या व्यवसाय को सफल बनाने के लिए ज़रूरी है कि व्यक्ति उससे संबंधित नैतिक एवं शिष्टाचार के आधारभूत नियमों के पालन पर भी विशेष ध्यान दे। जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए कुछ मूलभूत सिद्धांत होते हैं। धार्मिक एवं सामाजिक मूल्य हमारे कार्य एवं व्यवसाय के संबंध में भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं। मिसाल के तौर पर जिस प्रकार इस्लाम धर्म हमें जीवन की हर संभावित स्थिति में मार्गदर्शित करता है, उसी प्रकार वह व्यवसाय एवं व्यापार के आधारभूत नैतिक मूल्यों को भी निर्धारित करता है। हमारे व्यापार को नैतिक तरीक़ों से संचालित करने के लिए एक संपूर्ण ढांचे के साथ-साथ व्यापार के इस्लामी सिद्धांत भी हैं। ये सिद्धांत न केवल मुसलमानों के लिए हैं, बल्कि उन सभी के लिए हैं जो नैतिक मूल्यों के साथ व्यापार एवं व्यवसाय का संचालन करना चाहते हैं।

व्यक्ति को अपने व्यापार एवं व्यवसाय के लिए अच्छी नीयत रखनी चाहिए। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) का कथन है कि निःसंदेह कर्मों का फल संकल्प (हृदय की इच्छा) पर आधारित है और हर व्यक्ति के संकल्प के आधार पर अच्छे या बुरे कर्मों का बदला मिलेगा।

(सही, बुख़ारी)

इस्लाम हमेशा हमें सभी मामलों में ईमानदार और सीधा होना सिखाता है। ईमानदारी पर अमल करने से ईश्वर हमारे कार्यों में अभिवृद्धि प्रदान करेगा। हमें ईमानदारी के सिद्धांतों का पालन करना सुनिश्चित करना होगा। ताकि हमारे कार्य सर्वशक्तिमान ईश्वर को प्रसन्न करने का कारण बनें और हम इहलोक के साथ-साथ परलोक में भी सफल हो सकें। ■■

इस्लामोफ़ोबिया

संक्रमण का शिकार होती शिक्षण संस्थाएं



इस्लामोफ़ोबिया ने हमेशा मुसलमानों के प्रति अज्ञानता को जन्म दिया है। लोगों में इस्लामोफ़ोबिया की जड़ों के गहरे होने के विभिन्न कारण हो सकते हैं। निस्संदेह कुछ कमियां मुसलमानों की रही हैं, लेकिन इस बीमारी को संक्रामक बनाने में इस्लाम विरोधी दुष्प्रचारकों की भूमिका सबसे ऊपर है। भारत में दिन प्रतिदिन इस्लामोफ़ोबिया आम होता जा रहा है। हमारे शैक्षणिक संस्थान भी अब इस पूर्वाग्रह से अछूते नहीं हैं। यह संक्रमण जो पहले उत्तर भारत तक ही सीमित था, अब भारत के दक्षिणी राज्यों में भी पहुंच चुका है।

मूल समस्या

देश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं में घटी हालिया घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि इन संस्थानों में किस प्रकार का माहौल बना हुआ है। मुस्लिम छात्रों को आतंकवादी बुलाना, छात्राओं से हिजाब उतारने के लिए कहा जाना और कभी-कभी पाकिस्तान चले जाने या भेज दिए जाने की बातें कहना इस्लामोफ़ोबिक संक्रमण के संकेत हैं। शैक्षणिक संस्थान तेज़ी से मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत, पूर्वाग्रह और भेदभाव का केंद्र बनते जा रहे हैं। मुस्लिम समुदाय से संबंधित छात्रों को अक्सर उनके साथियों के साथ-साथ उनके शिक्षकों द्वारा भी धमकाया जाता है।

स्कूल और कॉलेज ऐसे स्थान होने चाहिए जहां छात्र सीखने और अपना भविष्य बनाने के लिए जाएं, लेकिन दुर्भाग्य है कि उन्हें देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समाज के लिए अत्यधिक असुरक्षित और ज़हरीले स्थानों में परिवर्तित किया जा रहा है। सवाल उठता है कि क्या भारत के समकालीन शैक्षणिक संस्थान मुस्लिम छात्र-छात्राओं के लिए सुरक्षित हैं? एक ऐसे देश में जो विविधता को अपनी एकता की नींव होने पर गर्व करता है, इन संस्थानों का ऐसा असुरक्षित माहौल देश को किस दिशा में लेकर जाएगा?

जिस पीढ़ी के कंधों पर आधुनिक

मुख्य स्तम्भ



सुफ़ियान अहमद

‘जिस पीढ़ी के कंधों पर आधुनिक भारत के निर्माण की ज़िम्मेदारी है, उस पीढ़ी को नफ़रत की सीख देकर एक वर्ग विशेष को डराने की सोच बेहद ख़तरनाक है। यह सोच हमारी सदियों पुरानी गंगा जमुनी तहजीब को नष्ट कर रही है। आम लोगों को सतर्क इसलिए हो जाना चाहिए कि अब इस बहस की आग में नफ़रत का घी डालने का काम वो तबका कर रहा है जो पढ़ा-लिखा है, साधन संपन्न है और कई जगहों पर तो अपने राज्य की सत्ता पर भी विराजमान है।’

भारत के निर्माण की ज़िम्मेदारी है, उस पीढ़ी को नफ़रत की सीख देकर एक वर्ग विशेष को डराने की सोच बेहद ख़तरनाक है। यह सोच हमारी सदियों पुरानी गंगा-जमुनी तहज़ीब को नष्ट कर रही है। आम लोगों को सतर्क इसलिए हो जाना चाहिए कि अब इस बहस की आग में नफ़रत का घी डालने का काम वो तबक़ा कर रहा है जो पढ़ा-लिखा है, साधन संपन्न है और कई जगहों पर तो अपने राज्य की सत्ता पर भी विराजमान है। जाने-अनजाने जनसाधारण इन घटनाओं को उन्हीं के नज़रिये से देखने लगता है। लोग उनके कथित बुद्धिवाद के शिकार बन रहे हैं। प्रोपेगेंडा और बिकाऊ मीडिया उनके इस कृत्य में मुख्य सहभागी बन रहा है।

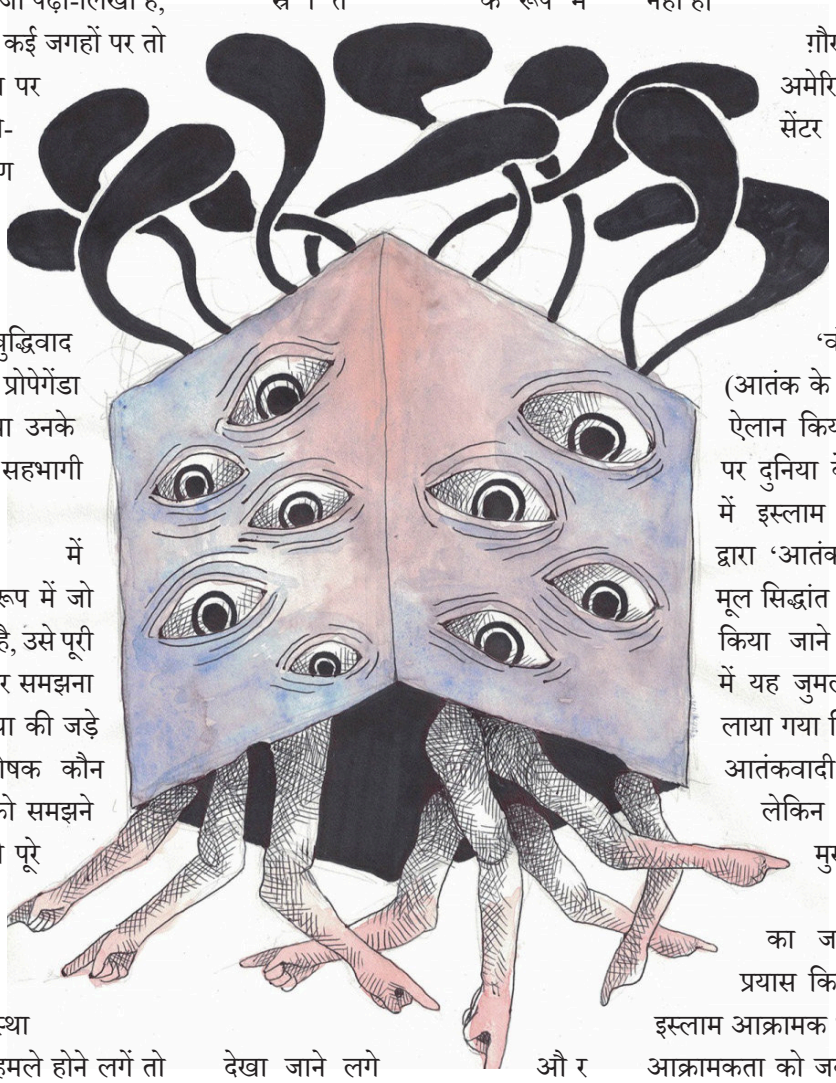

वर्तमान में इस्लामोफ़ोबिया के रूप में जो कुछ फैलाया जा रहा है, उसे पूरी गहराई से जानना और समझना होगा। इस्लामोफ़ोबिया की जड़े कहां हैं? इसके पोषक कौन लोग हैं? इस बात को समझने की ज़रूरत है। किसी पूरे समुदाय या देश, जिसमें विचारों की भिन्नता हो, के नागरिकों और व्यवस्था की मूल भावना पर हमले होने लगें तो इस पर गहन मंथन किया जाना नितांत आवश्यक हो जाता है।

इस्लामोफ़ोबिया से तात्पर्य इस्लाम या मुसलमानों के प्रति पूर्वाग्रह या पक्षपातपूर्ण व्यवहार करना है। 'इस्लामोफ़ोबिया' (islamophobia) यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- इस्लाम और फोबिया, जिसका हिंदी में मतलब होता है इस्लाम का डर। सरल शब्दों में यदि कहें तो इस्लाम से अकारण चिढ़ को 'इस्लामोफ़ोबिया' कहा जाता है। इस्लाम या मुसलमानों के प्रति भय, घृणा या पूर्वाग्रह, ख़ासकर जब इसे एक भू-राजनीतिक बल या आतंकवाद के स्रोत के रूप में देखा जाने लगे और सुनियोजित तरीक़े से इसको प्रचारित किया जाने लगे।

बौद्धिक हिंसा बनाम अभिव्यक्ति की आज़ादी

यह दुष्प्रचार दुनिया की विभिन्न सभ्यताओं के लिए कितना घातक होगा यह कहना मुश्किल है, लेकिन निश्चित रूप से यह मानवीय मूल्यों को असीमित नुक़सान पहुंचाएगा। यानी स्थितियों के और जटिल व ख़तरनाक होने की आशंका है। हालांकि इस्लामोफ़ोबिया के ख़िलाफ़ रणनीति बनाई जा सकती है। उन्हें कम किया जा सकता है, लेकिन यह लड़ाई इतनी छोटी और आसान नहीं है।

ग़ौरतलब है कि अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर '09/11' के हमलों के बाद वहां के तत्कालीन राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने 'वॉर ऑन टेरर' (आतंक के विरुद्ध लड़ाई) का ऐलान किया। तब आम तौर पर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में इस्लाम विरोधी शक्तियों द्वारा 'आतंक' को इस्लाम के मूल सिद्धांत के रूप में प्रचारित किया जाने लगा। उसी दौर में यह जुमला भी प्रचलन में लाया गया कि 'सब मुसलमान आतंकवादी नहीं होते, लेकिन सभी आतंकवादी मुसलमान होते हैं।'

एक तरह का जनमत बनाने का प्रयास किया जाने लगा कि इस्लाम आक्रामक धर्म है और उसकी आक्रामकता को जवाबी आक्रामकता से ही ख़त्म किया जा सकता है। इस्लाम और इसके मानने वालों को शक की निगाह से देखा जाने लगा। मस्जिदों और मदरसों की निगरानी बढ़ा दी गई और कहा जाने लगा कि इस्लाम और इस्लाम धर्म को मानने वालों को ख़ुद

को बदलना होगा। इस तरह से फैलाए गए इस्लामोफ़ोबिया का परिणाम भारत समेत दुनिया के विभिन्न हिस्सों में सामने आने लगा। इस्लाम विरोधी शक्तियों को इस्लाम और मुसलमानों को निशाने पर लेने का ज़रिया मिल गया।

आज भारत सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में इस्लामोफ़ोबिया से जुड़ा आए दिन कुछ न कुछ विशेष घटित होता रहता है। यहां मक़सद उनका लेखा जोखा प्रस्तुत करना नहीं है, सिर्फ़ यह बताने का प्रयास है कि ज़ाहिरी तौर पर तो तमाम घटनाएं अलग-अलग प्रतीत होती हैं, लेकिन यदि गहनता से ग़ौर किया जाए तो इनकी कड़ियां आपस में जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। घटनाओं को उनकी संपूर्णता में देखें तो उनकी आड़ में किया जाने वाला छल समझ में आने लगता है।

किसी हिंसक, आतंकवादी या अप्रिय घटना होने पर उस घटना को अंजाम देने वालों की निंदा होनी चाहिए और उन्हें उनकी करनी का दंड दिया जाना चाहिए, परंतु हिंसक घटनाओं की आड़ में पूरे मुस्लिम समुदाय पर हिंसक और क्रूर होने का आरोप मढ़ दिया जाता है। मुसलमानों के साथ होने वाली बौद्धिक हिंसा को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नाम दे दिया जाता है। पहले मुसलमानों को उकसाया जाता है, जब वे हिंसक प्रतिक्रिया जताते हैं तो इस्लाम विरोधी तर्क रखते हैं कि मुसलमान हिंसक होते हैं। इस प्रकार मुसलमानों से चूक कराने के बाद उसी आधार पर वे मुसलमानों को हिंसक साबित करने लग पड़ते हैं। इस खेल में बड़ी चालाकी से मुसलमानों और इस्लाम को बदनाम किया जाता है।

हमारे ही देश में अक्सर धर्म के नाम पर अल्पसंख्यकों और दलितों पर हमले होते रहते हैं। इन मामलों में कभी आलोचना का केंद्र बिंदु धर्म विशेष नहीं होता, धार्मिक पुस्तकें और धर्मगुरु नहीं होते। तो फिर इस्लाम, क़ुरआन और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) क्यों?

जो इस्लाम को हिंसक साबित करने में लगे हुए हैं वे क़ुरआन की



आयतों को उद्धृत करते हैं, लेकिन यह उद्धरण संदर्भ से हटकर किया जाता है। यदि अन्य धार्मिक पुस्तकों से भी ऐसे ही संदर्भ से हट कर कुछ बातें ले ली जाएं तो परिणाम एक समान ही होगा। ऐसी बातें बाइबल में भी मिल सकती हैं, तोरा में और गीता में भी मिल सकती हैं, लेकिन क्या इससे साबित होता है कि इन पवित्र पुस्तकों के अनुयायी हिंसक होते हैं?

विवेकशीलता की मांग

तमाम धर्मों में गुमराह व्यक्ति हो सकते हैं। उनके अच्छे या बुरे कार्यों से उनके विश्वास या धर्म का कोई लेना-देना नहीं होता। ऐसे मामलों में सभी धर्म के धर्मावलंबियों को किसी भी प्रकार के अतिवाद से बचना चाहिए। क्या यह उचित नहीं होगा हम धार्मिक मामलों में विवेकशीलता और संवेदनशीलता को अपनाएं।

समय की मांग है कि मुसलमानों को सूझ-बूझ और संयम से काम लेना चाहिए। हिंसक रूप में प्रतिक्रिया जताने के बजाय मुसलमानों को विवेकशीलता का परिचय देना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह कि किसी विचार का उत्तर विचार से दिया जाना चाहिए। तर्क का जवाब तर्क से और उकसावे के बदले विवेक का परिचय दिया जाना चाहिए। इस्लामोफ़ोबिया के प्रति प्रतिक्रिया जताते समय भी उन्हें इस धारणा को मज़बूत करने के बजाय कमज़ोर करने पर ध्यान देना चाहिए।

मुसलमानों को यह सुनिश्चित करना होगा कि वे इस्लाम विरोधियों द्वारा तैयार किए गए दुष्चक्र का शिकार न होने पाएं। मुसलमान अपने पैग़म्बर के जीवन को देखें तो पाएंगे कि वे बेहद धैर्यवान और क्षमावान थे। इससे मुसलमान जान और समझ सकते हैं कि किसी प्रकार के उकसावे के प्रति कैसी प्रतिक्रिया जतायी जा सकती है। निस्संदेह इस बीमारी से लड़ाई इतनी आसान नहीं है, लेकिन इसके संक्रमण को फैलने से रोकना होगा। ■■

अभिमत



मुकेश भारद्वाज

क्या यही सच है ?

जितनी बुरी कही जाती है उतनी बुरी नहीं है दुनिया
बच्चों के स्कूल में शायद तुमसे मिली नहीं है दुनिया

-निदा फ़ाज़ली

सुबह-सुबह हर मोहल्ले-सोसायटी के बाहर की तस्वीर। कोई बच्चा अपने पिता के पांव पकड़ कर सुबक रहा है तो कोई बच्ची मां के कंधों पर सोई-सोई सी कह रही, आज स्कूल नहीं जाना। कोई ख़ुशी में पूछ रहा कि आज मेरे लंच बॉक्स में क्या दिया है, तो कोई बता रहा है कि उसकी 'टीचर मैम' कितनी प्यारी है और स्कूल में घुसते ही कितने अच्छे से 'विश' करती हैं।

ऐसे दृश्यों में मां-बाप के चेहरों पर कोई शिकन नहीं है। उनके लिए तो स्कूल जाता बच्चा सबसे ख़ुश और सुरक्षित है। अवकाश के दिनों के अलावा स्कूल के लिए बच्चों का निकलना इस बात का संदेश है कि घर में सब कुछ ठीक है। स्कूलों से उम्मीद की जाती है कि वे इस दुनिया की सबसे प्यारी और भरोसेमंद जगह बने। स्कूलों को लेकर निदा फ़ाज़ली जो भरोसा जताते हैं हर अभिभावक चाहता है कि वह भरोसा क़ायम रहे।

स्कूल शिक्षक किसी बच्चे के लिए इस दुनिया में पहली आधिकारिक शक्ति होता है। सही-ग़लत की आधिकारिक समझ वहीं से मिलती है। जो चीज़ आपने स्कूल में एक बार सीख ली उसे ताउम्र नहीं भूलते हैं। बच्चा इसी स्कूल में सबसे पहले 15 अगस्त, 26 जनवरी को तिरंगा फ़हराते शिक्षक को देखता है। इन अवसरों पर अपने शिक्षकों का भाषण उसके लिए किसी राष्ट्र-प्रमुख के भाषण से कम नहीं होता। कोई स्कूल, वहां का प्रमुख बच्चे को देश के लिए तैयार कर रहा होता है।



ऐसे ही स्कूल से एक वीडियो आता है। शिक्षिका बच्चे को उसके सहपाठी से थप्पड़ लगवाती है। इस वीडियो पर घर-परिवार से लेकर सरकार तक को आपत्ति करने के लिए यही एक बहुत बड़ी वजह थी कि एक बच्चे को दूसरे बच्चों से पिटवाया जा रहा है। यहां एक और वजह भी थी कि वीडियो में दिख रहे थप्पड़ खाने वाले और थप्पड़ लगाने वाले बच्चों का धर्म अलग था। मारने वाले बच्चों की अब आगे मानसिकता क्या होगी?

एक अभिभावक के तौर पर सोचिए, जिन बच्चों ने अपने सहपाठी पर थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया उनकी आगे की मानसिकता क्या होगी। थप्पड़ मारना उनके लिए स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा हो जाएगा अगर सामने वाला उनके जाति, धर्म से अलग मामला हो। और, जिस बच्चे के गालों पर थप्पड़ लगा? सोचिए उसके मन में स्कूल परिसर, अपने शिक्षक और ख़ास धर्म के सहपाठियों के लिए कितनी नफ़रत पैदा होगी।

बच्चे के अवचेतन मन में बैठी इस

नफ़रत का मरहम एक ही चीज़ के पास था, क़ानून और संविधान, लेकिन ज़िले के दबंग नेता पूरे मीडिया के कैमरों के सामने दोनों बच्चों को गले लगवाते हुए दावा करते हैं कि मामला ख़त्म हो गया। प्राथमिकी के बाबत सवालों पर कहते हैं कि इस ज़िले में हमारी इतनी भी न चलेगी क्या (मतलब प्राथमिकी रद्द हो जाएगी)।

स्कूल के इस मामले में सभी संस्थाओं का ढहना दिख रहा है। शिक्षिका तृप्ता त्यागी के इस असंवैधानिक कृत्य का वीडियो वायरल होने के बाद ख़बरों के तथ्य जांचने वाली वेबसाइट के सह-संस्थापक पर मुक़दमा दर्ज किया गया कि उसने इस मामले में बच्चे की पहचान उजागर की, जबकि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) के आपत्ति जताने पर उसने 'एक्स' की पोस्ट डिलीट कर दी थी।

अब एक और वीडियो वायरल होता है। उस किसान नेता के वीडियो से किसी तरह की एजेंसी को कोई आपत्ति नहीं है, जिसमें दोनों बच्चों को गले मिलाकर माहौल ठीक करने की वाहवाही लूटी जा रही है। पीड़ित बच्चों के ज़रिए स्थानीय नेता अपना वीडियो वायरल करने का जुगाड़ कर बैठे। उस वीडियो को देखकर कोई भी समझ सकता है कि इसमें थप्पड़ खाने वाला बच्चा कौन है और थप्पड़ मारने वाला बच्चा कौन है। कैमरे के सामने दोनों बच्चों के चेहरों की असहजता शायद बाल संरक्षण के दायरे में नहीं आई होगी।

बच्चे को न्याय दिलाने वाली प्राथमिकी को रद्द करवाने का जज्बा दिखाने वाली बात भी हर तरह की एजेंसी के कान ने सुने ही होंगे। फिर भी उस नेता की तरफ़ से हर तरह की एजेंसी का मुंह फेर लेना क्या संदेश देता है? वहां पर पीड़ित बच्चों की पहचान उजागर होने, उस वीडियो के वायरल होने से एजेंसी को कोई दिक़्क़त नहीं है तो हम सभी को एजेंसी की इस कार्यप्रणाली से दिक़्क़त होनी चाहिए। पीड़ित बच्चों का इस तरह का इस्तेमाल क्यों किया गया जो संवैधानिक मूल्यों के ख़िलाफ़ जाता है।

बात करते हैं वीडियो की। ऐसे वीडियो की ज़रूरत ही नहीं पड़ती अगर तृप्ता त्यागी ने शिक्षण-प्रशिक्षण के बुनियादी सिद्धांत को समझा होता। सोचिए, जब वीडियो वायरल होने के बाद सत्ता पक्ष से जुड़े नेता उसके समर्थन में हैं, किसान नेता मामला

तृप्ता त्यागी जैसी शिक्षक ने संविधान की प्रस्तावना पढ़ी और समझी होती तो ऐसी हरकत ही नहीं करती। ग़लती किसी से भी हो सकती है जो अपराध की श्रेणी तक जा सकती है, लेकिन तृप्ता त्यागी ने जिस तरह अपने किए पर पछतावे से इनकार किया वह और भी ज़्यादा ख़तरनाक है।



केंद्र सरकार अपनी नई शिक्षा-नीति के प्रचार-प्रसार में व्यस्त है, लेकिन क्या उसे यह देखने की फुरसत है कि दिल्ली व अन्य संपन्न इलाकों से दूर स्कूलों में किस नीति के तहत शिक्षा दी जा रही है? स्कूल के शिक्षकों का नैतिक और मानसिक स्तर कैसा है, इसे जांचने-परखने की कोई प्रणाली तैयार की है?



रफ़ा-दफ़ा करवाने की कोशिश में हैं तो वह वीडियो सामने नहीं आता तो क्या होता? ऐसे और कितने मामले रोज़ होते होंगे जिससे किसी को भी दिक़्क़त नहीं होती होगी।

कुछ समय पहले एक वीडियो मणिपुर से भी आया था। वीडियो आने के पहले वहां जातीय हिंसा में यौन उत्पीड़न की ख़बरें आ रही थीं, लेकिन यौन उत्पीड़न की ख़बरों से दिल्ली में बैठे साहित्यकारों और सोशल मीडिया आंदोलनकारियों को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। ख़बरें कौन पढ़ता है? तो सब विभिन्न कार्यक्रमों में कालजयी साहित्यकारों के साथ अपनी-अपनी सेल्फ़ी में ख़ुश थे। तभी मणिपुर के वीडियो पर दिल्ली केंद्रित वर्ग सुबकने लगा। वीडियो के बाद ही सरकार की चुप्पी भी टूटी और विपक्ष संसद में अविश्वास प्रस्ताव तक लेकर आया।

कहते हैं कि सरकार का इक़बाल बुलंद होना चाहिए। संविधान का इक़बाल बना रहना चाहिए, लेकिन ये दोनों संस्थाएं तभी बचेंगी जब स्कूलों का इक़बाल बचा रहे। स्कूल ऐसी संस्था हो, जहां किसी भी तरह के भेदभाव और हिंसा के बिना सबको बराबर शिक्षा दी जाए। उच्च कक्षाओं की स्कूली किताबों के पहले पन्ने पर संविधान की प्रस्तावना छपी होती है। यह प्रस्तावना हर बच्चे को आश्वस्त करती है कि एक बेहतर नागरिक बनने और जीवन में आगे बढ़ने में उसका धर्म, जाति, लैंगिक स्थिति आड़े नहीं आएंगे। स्कूल में उसके साथ कोई असंवैधानिक व्यवहार नहीं होगा।

तृप्ता त्यागी जैसी शिक्षक ने संविधान की प्रस्तावना पढ़ी और समझी होती तो ऐसी हरकत ही नहीं करती। ग़लती किसी से भी हो सकती है जो अपराध की श्रेणी तक जा सकती है, लेकिन तृप्ता त्यागी ने जिस तरह अपने किए पर पछतावे से इन्कार किया वह और भी ज़्यादा ख़तरनाक है। जिस व्यक्ति की संविधान में ही आस्था नहीं है वह उन किताबों को कैसे पढ़ाएगी जो संविधान का आदर करना सिखाती है। इन दिनों संविधान के बुनियादी आधार पर बहुत बहस हुई है। संविधान की बुनियादी संरचना जिस पहली जगह से शुरू होती है वह स्कूल है।

केंद्र सरकार अपनी नई शिक्षा-नीति के प्रचार-प्रसार में व्यस्त है, लेकिन क्या उसे यह देखने की फ़ुरसत है कि दिल्ली व अन्य संपन्न इलाक़ों से दूर स्कूलों में किस नीति के तहत शिक्षा दी जा रही है? स्कूल के शिक्षकों का नैतिक और मानसिक स्तर कैसा है, इसे जांचने-परखने की कोई प्रणाली तैयार की है?

इस मुद्दे को सिर्फ़ धर्म के कोण से देखना भी एक संकीर्णता होगी। सोशल मीडिया पर तृप्ता त्यागी के समर्थक कह रहे हैं कि हमने भी स्कूलों में मार खाई थी। स्कूल में पिटाई खाने वाले बच्चे अच्छे बनते हैं। वाक़ई? ऐसी अविकसित सोच वालों को शिक्षा का सही अर्थ पता ही नहीं है। अगर इसका समर्थन कर रहे हैं तो वे वकील, पत्रकार, शिक्षक जो भी बने हों ऐसी ग़लत शिक्षा उन्हें अच्छा नागरिक तो नहीं बना पाई।

मणिपुर से लेकर उत्तर प्रदेश। आए दिन हमारे पास ऐसे वीडियो आ रहे हैं जो मनुष्यता के पतन का नया अध्याय लिख रहे हैं। पतन के ये दृश्य इतने भयावह हैं जिनकी व्याख्या शब्दों के ज़रिए मुश्किल होती जा रही है। मणिपुर का यौन उत्पीड़न हो या शिक्षक द्वारा बच्चे का उत्पीड़न। इनके साथ अब अस्वीकरण भी नहीं होता कि दृश्य आपको विचलित कर सकते हैं। आए दिन सामने आ रही ऐसी घटनाओं के बाद प्रतिक्रिया के खंड में यह लिखना उबाऊ लगने लगा है कि हम शर्मिंदा हैं। अब शर्म ही सत्य है। ■■

(साभार : जनसत्ता)



रोकना होगा यह संक्रमण

समाधान



संपादन प्रभाग

ह्यूमन राइट्स वॉच (HRW) द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि मुस्लिम, दलित और आदिवासी पृष्ठभूमि के छात्र, विशेष रूप से क़स्बों और टियर-2 शहरों में गंभीर प्रकार के भेदभाव का शिकार होते हैं। हाल ही में उत्तर प्रदेश के मुज़फ़्फ़रनगर के नेहा पब्लिक स्कूल में एक चिंताजनक और बेहद निंदनीय घटना घटी, जहां एक सात वर्षीय मुस्लिम बच्चे को सहपाठियों ने थप्पड़ मारे। कक्षा में बैठे शिक्षक ने छात्रों को अन्य मुस्लिम छात्रों के ख़िलाफ़ नस्लीय टिप्पणियां करते हुए हिंसा करने के लिए मजबूर किया।

हाल की कई घटनाओं से पता चलता है कि इस्लामोफ़ोबिया उन शिक्षकों के बीच तेज़ी से फैल रहा है जो मुसलमानों और उनके धार्मिक प्रतीकों के प्रति अधिक पक्षपाती हो गए हैं, हालांकि उनका मुख्य काम बच्चों को शिक्षित करना और सभी बच्चों में उनकी आस्था और विचारधारा से परे एकता की भावना पैदा करना है।

यह सामाजिक बीमारी जो पहले उत्तर भारत तक ही सीमित थी अब धीरे-धीरे दक्षिण भारत तक पहुंच गई है। जिन राज्यों में हिजाब पर कोई प्रतिबंध नहीं है, वहां परीक्षा के दौरान मुस्लिम छात्राओं को हिजाब पहनने से रोके जाने की ख़बरें सामने आई हैं। तमिलनाडु में एक हालिया घटना में एक 27 वर्षीय मुस्लिम महिला को हिंदी की परीक्षा देने से पहले अपना हिजाब हटाने के लिए कहा गया।

कर्नाटक में पिछले साल एक बड़ा विवाद देखने को मिला जब उडुपी जैसी जगहों पर सरकार द्वारा संचालित प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों ने स्कूल यूनिफॉर्म से संबंधित नीति का उल्लंघन बताते हुए हिजाब पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया। एक और परेशान करने वाली घटना तब

सामने आई जब दिल्ली के एक सरकारी स्कूल के शिक्षक ने कक्षा में काबा और पवित्र क़ुरआन के बारे में अपमानजनक टिप्पणी की।

बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, स्कूल और खेल के मैदान पुरुष और महिला दोनों मुस्लिम छात्रों के लिए ख़तरनाक स्थान बन गए हैं। भारतीय स्कूलों में मुस्लिम छात्रों के साथ भेदभाव पर किताब लिखने वाली नाज़िया एरम का हवाला देते हुए, बीबीसी की रिपोर्ट में कहा गया है कि पांच और छह साल के मुस्लिम छात्रों को भी उनके हिंदू सहपाठियों द्वारा आतंकवादी और पाकिस्तानी कहा गया है।

इससे पता चलता है कि इस तरह की बातें माता-पिता सहित परिवार के बड़े सदस्यों द्वारा की जा रही थीं, अन्यथा छह साल का लड़का या लड़की अपने स्कूल के सहपाठियों के आतंकवादी या पाकिस्तानी होने पर टिप्पणी कैसे कर सकते हैं? इससे यह भी पता चलता है कि समाज में इस्लामोफ़ोबिया की जड़ें कितनी गहरी हो चुकी हैं और इसे जड़ से उखाड़ना कोई आसान काम नहीं है।

एरम ने बीबीसी को बताया कि हिंदू छात्रों ने अपने मुस्लिम सहपाठियों पर इस तरह की टिप्पणी की, "क्या आप मुस्लिम हैं? मुझे मुसलमानों से नफ़रत है। क्या आपके माता-पिता घर पर बम बनाते हैं? क्या आपके पिता तालिबान का हिस्सा हैं? वह पाकिस्तानी है। वह एक आतंकवादी है। उसे नाराज़ मत करो, वह तुम पर बम गिरा देगी।"

देश में व्याप्त नफ़रत का माहौल स्कूलों और कॉलेजों के द्वार तक प्रवेश कर चुका है। इसने छात्रों और शिक्षकों को भी अपने ज़हर से नहीं बचाया है। सत्ता के उच्चतम पदों पर बैठे लोगों द्वारा अपनाई गई चुप्पी की नीति और मुसलमानों के ख़िलाफ़ घृणा अपराधों और इस्लामोफ़ोबिया के कृत्यों के ख़िलाफ़ बोलने से परहेज़ करने से हमारे देश के सामाजिक ताने-बाने पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है और इससे धार्मिक आधार पर असहिष्णुता और ध्रुवीकरण हो रहा है।

इस्लाम तथा मुसलमानों के प्रति भय, घृणा तथा दुश्मनी का माहौल पैदा करना, कुछ लोगों के राजनैतिक हित में हो सकता है तथा कुछ लोगों के पूर्वाग्रहों की पूर्ति कर सकता है, उन्हें क्षणिक सुख दे सकता है, परंतु नई पीढ़ी में देश के एक बड़े समुदाय के प्रति दुर्भावना भर देना, किसी भी स्थिति में देश हित में नहीं होगा। भारत विश्व में एक समृद्ध शक्तिशाली एवं नेतृत्व क्षमता रखने वाले राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। यहां मानव संसाधन विशेषकर युवा वर्ग हैं, अच्छी शिक्षण संस्थाएं हैं, अपार प्राकृतिक संसाधन हैं। इन सबके बलबूते हमारा देश, विश्व मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान बना सकता है। बशर्ते कि देश का राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण शांतिमय हो, यहां क़ानून का शासन हो, न्याय को सर्वोपरि रखा जाए तथा सभी धर्मों और उनके अनुयायियों को समान दृष्टि से देखा जाए। यही भारत की आत्मा है और यही हमारा संविधान भी कहता है।

भय, घृणा तथा दुश्मनी का माहौल पैदा करना, कुछ लोगों के राजनैतिक हित में हो सकता है तथा कुछ लोगों के पूर्वाग्रहों की पूर्ति कर सकता है, उन्हें क्षणिक सुख दे सकता है, परंतु नई पीढ़ी में देश के एक बड़े समुदाय के प्रति दुर्भावना भर देना, किसी भी स्थिति में देश हित में नहीं होगा।

इस्लामोफ़ोबिया-अर्थात् इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध नकारात्मक सोच तथा फ़र्ज़ी डर पैदा करना है। इस डर के द्वारा नफ़रत दुश्मनी दुर्भावना तथा नस्लवादी भेदभाव को बढ़ावा देकर मुसलमानों की छवि बिगाड़ने का उद्देश्य है और यह सिद्ध करने का प्रयास है कि ये लोग समाज के लिए हानिकारक हैं।

जब यह सोच समाज में फैलने लगती है तो मुसलमान तथा उनका संपूर्ण कल्चर हमले की चपेट में आ जाते हैं, तर्क, विवेक एवं वास्तविकता कहीं गुम हो जाती है तथा केवल भावनाओं के सहारे समाज में भय का वातावरण पैदा कर दिया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में इसमें वृद्धि देखने को मिली है।

इसके पीछे सदियों पुराने पूर्वाग्रह हैं और कुछ नई 'ज़रूरतें एवं उद्देश्य' भी हैं ताकि इस्लाम की अच्छी छवि लोगों की दृष्टि से ओझल रहे तथा मुसलमानों को भय के इस वातावरण में दबाव में रखकर वे अपने आर्थिक एवं राजनैतिक एजेंडे को लागू कर सकें।

लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा जिस सामाजिक क्रांति की स्थापना हुई उससे आम लोगों ने सुख-शांति, बराबरी न्याय तथा हमदर्दी की ठंडी छांव को महसूस किया, परन्तु घमंडी तानाशाहों तथा पूर्वाग्रहों से पीड़ित संकीर्ण मानसिकता

रखने वालों ने इस्लाम का विरोध किया और दुश्मनी पर उतर आए, यहां तक कि जंग पर भी आमादा रहे। इधर गत शताब्दी में दो 'इज़्म' कम्यूनिज़्म तथा कैपिटलिज़्म (पूंजीवाद) का विश्व स्तर पर उदय हुआ। सोवियत यूनियन के बिखराव के पश्चात कम्यूनिज़्म का जादू समाप्त हो गया तथा पूंजीवादी प्रणाली के स्वाभाविक दोषों के चलते सामाजिक समस्याएं आर्थिक संकट तथा राजनैतिक अस्थिरता आदि के कारण यह प्रणाली भी अपना प्रभाव खोने लगी और एक वैचारिक शून्यता (Ideological Vacuum) सी प्रतीत होने लगी।

यही वह समय था जब इस्लाम एक प्रणाली या व्यवस्था (System or Order) की हैसियत से सामने आया तथा उच्च स्तरीय अकादमिक शोध के द्वारा विश्व की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान में प्रभावी वैकल्पिक व्यवस्था (Effective alternative system) के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा, जिसकी अनेक ग़ैर-मुस्लिम प्रतिष्ठित विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों ने सराहना की और मुस्लिम विद्वानों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों का समर्थन एवं अनुमोदन किया। परन्तु यही चीज़ कुछ लोगों को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने इस्लाम के योगदान को स्वीकारने के बजाय उसे अपने कल्चर के लिए ख़तरा समझा। यहीं से इस्लामोफ़ोबिया या इस्लाम के प्रति डर पैदा करने और मानव विरोधी दर्शाने की शुरुआत हुई।



जबकि ख़तरे और डर का कोई तर्कसंगत कारण मौजूद न था। इस्लाम धर्म से डरने की आवश्यकता नहीं है। यह सब धर्मों के आदर की शिक्षा देता है एवं सभी धर्म ग्रंथों को मान्यता देता है (क़ुरआन, 2:4)। सभी धर्म गुरुओं/ईशदूतों में आस्था का आदेश देता है (क़ुरआन, 2:285)। यह भी आदेश देता है कि धर्म के मामले में ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं (क़ुरआन, 2:256)। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को संपूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए रहमत और दयालुता बताया गया है (21:107)। उनकी शिक्षाएं संपूर्ण मानवजाति के लिए हैं। संस्कृत के विद्वानों के शोधानुसार, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की भविष्यवाणी भारतीय धर्म ग्रंथों में उल्लिखित है (देखिये पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय के शोध)। क़ुरआन की शिक्षाएं समस्त इन्सानों के लिए हैं। ईश-भक्ति,



ईशपरायणता, परलोक में मोक्ष की प्राप्ति, संसार में इन्साफ़, बराबरी, शोषण-मुक्त, प्रेम तथा दया-भाव से परिपूर्ण सामाजिक जीवन एवं समृद्ध आर्थिक वातावरण पर बल दिया गया है।

हां, प्रत्येक समाज की भांति मुस्लिम समाज में भी कुछ लोग सही सिद्धांतों से हटकर असत्य, अन्याय तथा

शोषण का मार्ग अपना सकते हैं, हिंसा और आतंक जैसे कार्यों तक जा सकते हैं। ऐसे लोगों का समर्थन तो दूर उन पर कठोर दंडात्मक कार्यवाही का मुस्लिम समाज ने सदा आह्वान किया है जो एक निष्पक्ष न्यायिक प्रणाली के माध्यम से हो न कि भीड़ तंत्र या पूर्वाग्रहग्रस्त लोगों के द्वारा। साथ ही मुस्लिम समाज की इस ज़िम्मेदारी से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि वे समाज सुधार के कार्य को दृढ़ता से करता रहे तथा हर प्रकार की नकारात्मक सोच से लोगों को बचाए।

मुसलमानों का संपूर्ण जीवन क़ुरआन तथा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं के अनुरूप हो, वे सबके लिए रहमत साबित हों, समाज तथा अपने वतन के विकास एवं उत्थान में तथा यहां अमन-शांति व सदाचार के माहौल को बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दें। यही इस्लाम की शिक्षा है और ईश्वर को भी यही पसन्द है।

मुसलमानों के धर्मगुरुओं, बुद्धि-जीवियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे देशवासी भाई-बहनों की भ्रांतियों को उनके मन के काल्पनिक या मीडिया द्वारा बैठाये गये भय को दूर करने का प्रयास करें तथा उन्हें वास्तविकता से अवगत कराएं। आम मुसलमान भी अपने कार्य, व्यवहार एवं आचरण द्वारा लोगों को इस्लाम की शिक्षाओं से परिचित कराएं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी न्याय के मार्ग से विचलित न हों। किसी प्रतिक्रिया या प्रतिशोध का शिकार न हों।

जैसा कि उल्लेख किया गया कि समाज में भय, नफ़रत तथा दुश्मनी के इस वातावरण से हो सकता है कि कुछ लोगों को सामयिक रूप से कुछ राजनीतिक लाभ प्राप्त हो जाए, परन्तु यह देश तथा समाज के लिए घातक है। सभ्य



समाज में भीड़ द्वारा हत्याएं, नवजवानों को हथियार चलाने की ट्रेनिंग, एक समुदाय विशेष को प्रत्येक मुद्दे पर दोषी मानते हुए एक 'विलेन' बनाकर पेश करना, इतिहास की मनगढ़ंत व्याख्या करना, यह प्रचारित करना कि इस्लाम और मुसलमानों में कुछ भी भला नहीं है तथा मुसलमानों के योगदान को स्वीकार करने के स्थान पर उनमें केवल बुराई ही देखना और दिखाना, कुछ गिने-चुने लोगों के अपराधों के लिए पूरे समुदाय को 'गुनहगार' घोषित कर देना किसी भी प्रकार उचित एवं न्यायसंगत नहीं है। इससे बड़ी त्रासदी और क्या होगी कि ज़ुल्म व ज़्यादती करने वाले अत्याचारियों का महिमामंडन किया जाए तथा उन्हें सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाए।

इस नकारात्मक सोच से समाज को निकालने के लिए सभी संप्रदायों के प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित न्यायप्रिय लोग आगे आएं। सभी पक्षों के बीच सौहार्द बनाने के लिए संपर्क एवं वार्ता की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए। जिस बड़े पैमाने पर माहौल को बिगाड़ा जा रहा है उसका तुरंत संज्ञान लेना चाहिए। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया तथा शैक्षणिक संस्थाओं को भी देश के वातावरण को सुधारने में सकारात्मक भूमिका के लिए तैयार करने की आवश्यकता है।

स्कूलों और कॉलेज परिसरों में तेज़ी से फैल रहे इस्लामोफ़ोबिया को सरकार द्वारा एक सामाजिक बुराई के रूप में मान्यता देकर और इसके ख़तरे को ख़त्म करने के लिए उचित क़ानूनी मसौदा तैयार करके आधिकारिक तौर पर संबोधित किया जाना चाहिए।

इससे पहले कि नफ़रत का विष घातक हो जाए हमें सचेत हो जाना चाहिए। देश में सभी धर्मों और संप्रदायों के बीच वही आपसी विश्वास, सौहार्द एवं भाईचारा स्थापित हो जाए, जिसके लिए भारत विख्यात रहा है। यही वह फार्मूला है जिससे अमन-शांति एवं आर्थिक ख़ुशहाली स्थापित होगी तथा भारत विश्व पटल पर अगुवाई की भूमिका निभाने की स्थिति में होगा।

भेदभाव किसी के साथ न हो, नफ़रत को बढ़ावा न दिया जाए, किसी के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर फ़ैसले न लिए जाएं। धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र या लिंग के आधार पर कोई अंतर न हो। परस्पर भाईचारे, सौहार्द एवं सहयोग के सिद्धांत को अपनाकर भारत निश्चित रूप से विश्व स्तर पर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

■■

कविता

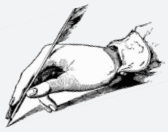

एक बार फिर

देवांग दीक्षित "आज़ाद"

चाहे कितनी ही बार गिरा
धूल में मिला
बेदर्दी से रौंदा गया तेरा सिर
चल उठ मुसाफ़िर
एक बार फिर

क्या ज़िन्दगी अंतहीन पीड़ा का बन गयी एक सफ़र
क्या मायूसियों ने किया है तेरे दिल में घर
क्या कांटे उगते हैं वहां, जहां आता तू फूल बोकर
क्या आंसू बहते हैं तेरी मुस्कुराहट धोकर
क्या खायी है तूने ज़िन्दगी के हर क़दम पर एक ठोकर

जीत को न पाना हार नहीं
हार मानकर रुक जाना ही सच्ची हार है
चलते रहो चलते रहो
चलते रहना ही तो जीवन का आधार है
जाना अगर तुझे पार है
तो उठा पतवार मुसाफ़िर
एक बार फिर

क्या नाउम्मीदी का बादल छाया है
फिर से हारूंगा क्या ये डर समाया है
अरे जीवन तो मन की छाया है
जो माना है तूने मन में
वो ही बाहर आया है
तो उठा मशाल जला उम्मीद की चिनगार
कर सीना चौड़ा, उठा अपना सिर
मुसाफ़िर एक बार फिर

हो सकता है तू शिखर से बस थोड़ा ही नीचे हो
हो सकता है तू मंज़िल से बस थोड़ा ही पीछे हो
हो सकता है बस हो थोड़ी ही दूर किनारा
लगा दे दांव पे वो सब जिसे तुम कहते तुम्हारा
कमज़ोर न समझ ख़ुद को
विराट शक्ति से है विधाता ने तुझको संवारा

कर दे अर्पण अपना सर्वस्व, मंज़िल की वेदी पर
गाएंगे तब राही और मंज़िल एक होकर
पाएंगे तब अंगारे सूरज को, ख़ुद को खोकर

पाकर यों जीवन में नव प्राण
उदास ओठों पे लौटेगी मुस्कान
जीवन का फिर जश्न मनेगा
इन्द्रधनुष फिर से उभरेगा
सतरंगी होगा आसमान
एक बार फिर



चांद के पार

कीर्तिमान



डॉ. प्रदीप कुमार

आज हर तरफ़ बस चन्द्रयान-3 की धूम है। आम व ख़ास के सीने गर्व से फूले हुए हैं। निस्सन्देह वैज्ञानिक दृष्टि से यह एक महान उपलब्धि है। और हमें अपने देश की सफलता पर ख़ुश होना चाहिए और उस पर गर्व भी होना चाहिए कि हमारे देश ने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। चंद्रयान-3 की सफलता गौरव का सबब है, लेकिन यह बात समझ से परे है कि इस सफलता का श्रेय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को देने की बजाय सत्ताधारी पार्टी स्वयं ले रही है और इसे इस प्रकार चित्रित किया जा रहा है कि यदि वर्तमान राजनीतिक नेतृत्व न होता तो हमारे वैज्ञानिकों को यह सफलता न मिल पाती।

ग़ौरतलब है कि यह सफलता कोई हालिया प्रयासों का परिणाम नहीं है। 70 और 80 के दशक से ही इस दिशा में प्रयास शुरू हो गए थे। आज हमारे वैज्ञानिकों ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर विक्रम लैंडर उतारकर पूरी दुनिया में देश की कामयाबी के झंडे गाड़ दिए हैं। अब भारत दुनिया के उन चार देशों में से एक है, जिन्होंने चांद पर अपना उपग्रह उतारा है। इनमें भी चांद के दक्षिणी ध्रुव पर यह करामात दिखाने वाला भारत पहला देश है। इस अभूतपूर्व सफलता के लिए वो सैंकड़ों वैज्ञानिक ज़िम्मेदार हैं जिन्होंने पिछले साठ वर्षों में रात-दिन मेहनत करके यह संभव कर दिखाया है।

अब जबकि यह उपलब्धि हासिल हो गई है तब से इसका श्रेय लेने वालों में होड़ लग गई है। जहां भाजपा और संघ परिवार इसे मोदी जी के नेतृत्व में मिली सफलता बताकर जश्न मना रहे हैं, वहीं कांग्रेस के नेता ये याद दिला रहे हैं कि इस सफलता के पीछे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की

दूरदृष्टि और वैज्ञानिक सोच है। जिन्होंने डॉ. विक्रम साराभाई की योग्यता को पहचाना और वर्ष 1962 में 'इंडियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च' की स्थापना की। यही समिति 15 अगस्त 1969 को 'इसरो' (इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाइज़ेशन) बनी। तब से होमी जहांगीर भाभा, विक्रम साराभाई, सतीश धवन, मेघनाद साहा, शांति स्वरूप भटनागर, एपीजे अब्दुल कलाम और वर्तमान में श्रीधर सोमनाथ व के. सिवान जैसे वैज्ञानिकों ने भारत के अंतरिक्ष अभियान को दिशा प्रदान की।

23 अगस्त 2023 को मिली सफलता एक ही दिन के प्रयास से संभव नहीं हुई है। इसके पीछे वर्षों की कठिन तपस्या का इतिहास है। भारत ने सबसे पहला उपग्रह 1975 में भेजा था जिसे 'आर्यभट्ट' के नाम से जाना जाता है। तब से अब तक भारत द्वारा 120 उपग्रह अंतरिक्ष में भेजे जा चुके हैं। इस तरह क्रमशः हम इस मक़ाम तक पहुंचे हैं। हर बार भारत के वैज्ञानिकों ने कुछ नया सीखा और उसके अनुसार अगले उपग्रह को तैयार किया। वर्ष 2019 में चंद्रयान-2 की विफलता से सीखकर चंद्रयान-3 भेजा गया और यह अभियान सफल रहा।

किसी भी देश की नीतियों पर उसके प्रधानमंत्री की सोच और नेतृत्व का असर पड़ता है। भारत के अन्तरिक्ष अभियान को आगे बढ़ाने में पंडित नेहरू के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. मनमोहन सिंह व नरेन्द्र मोदी सबकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसलिए किसी एक को इस उपलब्धि का श्रेय नहीं दिया जा सकता।

चंद्रयान-3 मिशन के विक्रम लैंडर का चांद पर सफलतापूर्वक उतरना

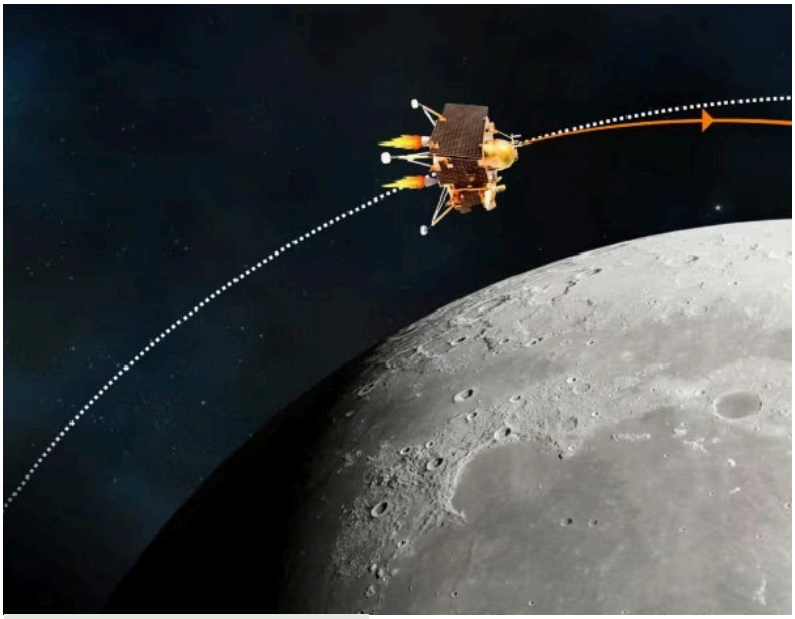

चंद्रयान-3 की सफलता निस्संदेह एक बड़ी उपलब्धि है। यह भारत की जनता के लिए गौरव का समय है। अंतरिक्ष में करने के बहुत से काम हैं, लेकिन हमारी प्राथमिकता मानव-जीवन को बेहतर बनाने वाले उपक्रमों की होनी चाहिए, क्योंकि हम एक ग़रीब देश हैं और हमारे देश की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी आज भी ग़रीबी रेखा से नीचे जीवन जीने को विवश है। इस उपलब्धि पर गर्व से उठने वाले सरों को अपने पैरों पर भी निगाह डालनी होगी।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की तकनीकी क्षमताओं का प्रभावी प्रदर्शन है। यह बात इसलिए भी ख़ासतौर पर उत्साहित करने वाली है क्योंकि चंद्रयान-2 की क्रैश लैंडिंग के कारण हमें आंशिक विफलता का सामना करना पड़ा था और हाल ही में रूस का चंद्रमा पर पहुंचने का अभियान विफल हो गया था।

हमारी अंतरिक्ष एजेंसी कई वाणिज्यिक उपयोग वाली सेवाएं भी मुहैया कराती है। इसरो भारतीय संचार अधोसंरचना में अहम हिस्सेदार है। यह मौसम सेवाओं, भौगोलिक और जियो मैपिंग सूचनाओं के बारे में भी अहम जानकारी मुहैया कराता है। इसके अलावा यह उपग्रह प्रक्षेपित करने के मामले में भी वाणिज्यिक रूप से भी सफल और किफ़ायती है।

इसका अर्थ यह हुआ कि इससे निजी कंपनियों की क्षमता और बढ़ेगी तथा सफलता के अवसर के नए आयाम खुलेंगे। पहले ही क़रीब 400 भारतीय स्टार्टअप अंतरिक्ष पर केंद्रित हैं। भविष्य में निजी क्षेत्र और इसरो के बीच और सहयोग से इन कंपनियों को वैश्विक अंतरिक्ष उद्योग में नए अवसरों का लाभ लेने का मौक़ा मिलेगा और इस तकनीकी क्षमता प्रदर्शन के बाद इसरो की बाज़ार हिस्सेदारी भी बढ़ सकती है। यह बात अहम हो सकती है, क्योंकि वैश्विक अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी कारोबार में

इसरो की हिस्सेदारी मात्र दो प्रतिशत है।

इस बात की अनदेखी नहीं होनी चाहिए कि इनमें से कई तकनीकों का इस्तेमाल रक्षा क्षेत्र में हो सकता है। यह बात रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के कार्यक्रम को गति देगी। इस तरह की सफलता से उत्पन्न उत्साह को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। कई स्कूली बच्चे होंगे जिन्होंने इस मिशन को देखा होगा और उनमें से कुछ यक़ीनन भविष्य में विज्ञान विषय में प्रवीणता हासिल करने के लिए प्रेरित हुए होंगे।

निश्चित रूप से यह भारत और सभी देशवासियों के लिए ख़ूब बधाई और ख़ुश होने का मौक़ा है कि चंद्रयान-3 ने चांद की सतह पर उतर कर इतिहास रच दिया है। यूं इस बार भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान यानी इसरो ने जैसी तैयारी की थी, उसमें पहले ही यह उम्मीद मज़बूत दिख रही थी कि देश का विज्ञान एक नया आसमान छूने जा रहा है, लेकिन इस क्षेत्र में हुए प्रयोगों में अब तक के अनुभवों को देखते हुए अंतिम पल तक सबकी सांसें एक तरह से रुकी हुई थीं। यह स्थिति स्वाभाविक ही थी क्योंकि ऐसे अभियानों में आख़िर के कुछ पल सबसे महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं, लेकिन अपनी चालीस दिन की यात्रा पूरी कर चंद्रयान-3 जिस पल चांद की सतह पर कामयाबी के साथ उतरा, उस पल ने दुनिया भर में देश का माथा ऊंचा कर दिया।

साथ ही एक बार फिर यह साबित हुआ है कि विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में देश के वैज्ञानिकों और ख़ासतौर पर इसरो का स्तर क्या है। हालांकि इससे पहले भी अंतरिक्ष में अन्य तमाम उपलब्धियों के ज़रिये देश ने सफलता की एक लंबी शृंखला क़ायम की है, लेकिन चंद्रयान-3 के अभियान को दुनिया भर में जिस तरह देखा जा रहा था, उससे इसकी अहमियत की भी पुष्टि होती है।

दुनिया के कई देश, जो अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीक के मामले में दुनिया भर में अग्रणी माने जाते हैं, भारत आज उनके समांतर खड़ा होने और कई मामलों में आगे निकल जाने का सफ़र तय कर चुका है। ज़ाहिर है, हमारे वैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र में भी अपनी क्षमता साबित कर दी है। यह सभी भारतीयों के लिए गर्व की बात है। बेशक, भारतीय विज्ञान ने लंबी यात्रा पूरी की है।

इस यात्रा में जो उतार-चढ़ाव आए हैं, यह उनको भी याद करने का समय है। चंद्रयान का सपना पिछली सदी के अंत में ही देखा गया था और उसके बाद ज़मीनी स्तर पर वर्ष 2003 में तैयारियां शुरू हुईं और आज यह बड़ी कामयाबी हमारे हाथ लगी है।

चंद्रयान-3 की सफलता निस्संदेह एक बड़ी उपलब्धि है। यह भारत की जनता के लिए गौरव का समय है। आशा है कि इस उपलब्धि से देश के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति के लिए भी कुछ राहें निकलेंगी, क्योंकि हमारे देश का आम नागरिक आज भी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्षरत है। अंतरिक्ष में करने के बहुत से काम हैं, लेकिन हमारी प्राथमिकता मानव-जीवन को बेहतर बनाने वाले उपक्रमों की होनी चाहिए, क्योंकि हम एक ग़रीब देश हैं और हमारे देश की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी आज भी ग़रीबी रेखा से नीचे जीवन जीने को विवश है। इस उपलब्धि पर गर्व से उठने वाले सरों को अपने पैरों पर भी निगाह डालनी होगी। ■■



ज्ञान के स्वर्णिम युग का सिंहावलोकन

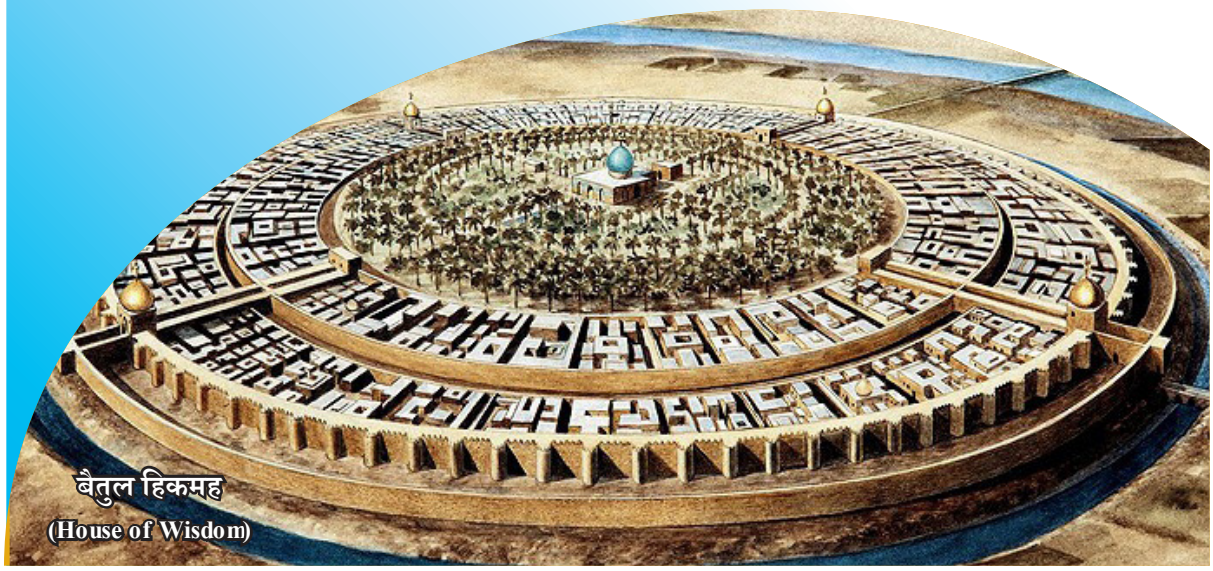

बैतुल हिकमह
(House of Wisdom)

इतिहास का सच और सच का इतिहास



सुहैल के.के.

जैसा कि हम जानते हैं, इस्लाम के अतीत का स्वर्णिम युग दुनिया के बौद्धिक जगत में आज भी चर्चा का विषय है। आठवीं शताब्दी में मुसलमानों के ख़लीफ़ा ने बग़दाद में "बैतुल हिकमह'' जिसे हाउस ऑफ़ विज़डम (House of Wisdom) कहा जाता है, स्थापना की थी। शोध कार्यों के लिए स्थापित इस संस्था का बजट आज भी दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयों, कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड से भी कहीं ज़्यादा है। इस्लाम के स्वर्णिम युग का आरंभ और अंत, कालक्रम में इसी "बैतुल हिकमह'' के उत्थान और पतन के साथ दिखाई देगा।

"बैतुल हिकमह'' एक बहुत ही प्रभावी संस्थान था, जिसमें उस समय के लगभग सभी विमर्श शोध का विषय बनाए जाते थे। यहां दुनिया भर के ज्ञान-विज्ञान और दर्शन के अनुवाद का कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता था। "अल-फ़राबी'' इस्लामी स्वर्ण युग के शुरुआती विद्धानों में से एक थे। इन्होंने प्लेटो और अरस्तू के सिद्धांतों को मुस्लिम दुनिया में प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अल-फ़राबी एक उत्कृष्ट भाषाविद् थे, जिन्होंने अरस्तू और प्लेटो के ग्रीक कार्यों का अरबी अनुवाद किया। उस ज़माने के ग्रीक दार्शनिकों अरस्तू और प्लेटो समेत दुनिया के लगभग सभी दार्शनिकों की पुस्तकों का अनुवाद "बैतुल हिकमह'' में हुआ। पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण जहां कहीं से भी ज्ञान-विज्ञान संबंधी नई चीज़ आती, वहां सबका अनुवाद होता था।



अल-ख़्वारिज़्मी



जाबिर बिन हय्यान



यदि हम पूरे विशुद्ध विज्ञान को तीन भागों में विज्ञाजित तीनों विधाओं के आधार पर ही आज हमें अपने आस- नहीं होता तो आधुनिक गणित नहीं होता। अल- नहीं होता। एल्केमी नहीं होता तो रसायन विज्ञान नहीं मुस्लिम विद्धानों का योगदान आज भी नज़र आता हैं। युग के उक्त मुस्लिम विज्ञानियों के योगदान को पूरी के मुस्लिम विज्ञानियों की सूची बहुत लंबी हैं। यह

उल्लेखनीय है कि बाद में ज्ञान-विज्ञान का यही अनुवादित संस्करण यूरोप के विकास की नींव बने, क्योंकि मूल संस्करण नष्ट हो चुके थे। पश्चिमी दुनिया को इन अनुवादित संस्करणों का पुनः अंग्रेज़ी अनुवाद करना पड़ा। इसलिए "बैतुल हिकमह" के महत्व और उसके प्रभाव को समझा जा सकता है।

शोध और नवाचारों के लिए जो निवेश किया गया था, उसका कोई दूसरा उदाहरण पूरे इतिहास में कहीं नहीं मिलता। यदि हम ज्ञान की कोई भी विधा देखें तो उसकी गहराई में हमें मुस्लिम विद्धानों का योगदान आज भी दिखाई देगा। "इब्ने सीना" (Avicenna) की पुस्तक 'द केनन ऑफ़ मेडिसिन' (अल-क़ानून फ़ी अल-तिब्ब) को बाइबल ऑफ़ मॉडर्न मेडिकल साइंस कहा जाता है। सामाजिक विज्ञान की यदि नींव देखी जाए तो "इब्ने ख़लदून" द्वारा लिखित पुस्तक 'मुक़द्मा' मील का पत्थर साबित होती है।

इसी प्रकार यदि हम पूरे विशुद्ध विज्ञान को तीन भागों में विभाजित करें तो वो है–अलजेब्रा, एल्केमी और अल-गोरिद्म, इन तीनों विधाओं के आधार पर ही आज हमें अपने आस-पास तमाम आविष्कार नज़र आते हैं। अलजेब्रा अगर नहीं होता तो आधुनिक गणित नहीं होता। अल-गोरिद्म अगर नहीं होता तो आधुनिक भौतिक विज्ञान नहीं होता। एल्केमी नहीं होता तो रसायन विज्ञान नहीं होता।

अलजब्रा "अल-ख़्वारिज़्मी" नामक विद्वान द्वारा लिखित पुस्तक 'अलजब्र वा अल-मुक़ाबला' से आया। दरअस्ल, अल-ख़्वारिज़्मी का नाम ही है अल-गोरिद्म। ये अब्बासिया दौर के एक महान गणितज्ञ, खगोलशास्त्री और भूगोलवेत्ता थे। उन्हीं के द्वारा लिखित पुस्तकों से "एल्गोरिथम" की शब्दावली अस्तित्व में आई। अल-ख़्वारिज़्मी ख़लीफ़ा के द्वारा बनाई गई संस्था "बैतुल हिकमह" से जुड़े हुए





अल-फराबी

करें तो वो हैं-अलजेब्रा, एल्केमी और अल-गोरिद्म, इन पास तमाम आविष्कार नज़र आते हैं। अलजेब्रा अगर गोरिद्म अगर नहीं होता तो आधुनिक भौतिक विज्ञान होता। ज्ञान-विज्ञान की प्रत्येक विधा की गहराई में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में इस्लामी इतिहास के स्वर्णिम दुनिया स्वीकार करती हैं। इनके अलावा भी इस युग थी इस्लाम के स्वर्णिम युग की विशेषता हैं।



इब्ने सीना

थे। इनका पूरा नाम "अबू अब्दल्लाह मुहम्मद इब्न मूसा अल-ख़्वारिज़्मी'' है। उनकी पुस्तकों से दर्शन, चिकित्सा, गणित, प्रकाशिकी और खगोल विज्ञान सहित कई विषयों से जुड़ी महान वैज्ञानिक उपलब्धियां सामने आईं।

इसी प्रकार "जाबिर बिन हय्यान'' के शोधों के परिणामस्वरूप एल्केमी (रस-विधा या रसायन विज्ञान) का आविष्कार हुआ। हय्यान आठवीं शताब्दी के महान रसायन विज्ञानी थे। आधुनिक रसायनशास्त्र की शुरुआत जाबिर बिन हय्यान से होती है। इन्होंने कार्बोनेट, आर्सेनिक, सल्फाइड, नमक के तेजाब, नाइट्रिक एसिड, शोरे के तेज़ाब, और फ़ास्फोरस की खोज की। पश्चिमी दुनिया इन्हें गेबर या जाबेर (Gaber or Jaber) के नाम से जानती है। धातुओं का सल्फर-पारा सिद्धांत, संतुलन का विज्ञान, कृत्रिम पीढ़ी का विज्ञान, रसायन विज्ञान में कार्बनिक पदार्थों का उपयोग आदि इनके उल्लेखनीय कार्य हैं।

हम सभी जानते हैं कि "ऑप्टिकल फाइबर केबल' आधुनिक समय की एक प्रमुख तकनीक है। हम चश्में पहनते हैं, कैमरों में लेंस का इस्तेमाल होता है और लाइटों में ऑप्टिक्स का इस्तेमाल होता है, इसके अलावा फास्ट इंटरनेट, ये सब कुछ संभव हुआ ऑप्टिक्स से और इसके लिए दुनिया इस्लामी स्वर्ण युग के महान भौतिक विज्ञानी "हसन इब्न अल-हेथम'' की आभारी है। अल-हेथम को आधुनिक ऑप्टिक्स (प्रकाशिकी) का जनक कहा जाता है। इनका जन्म 965 ई. में इराक़ के बसरा शहर में हुआ था। अल-हेथम का पूरा नाम "अबू अली अल-हसन इब्न अल-हेथम'' था। पश्चिमी दुनिया आपको अल्हाज़ेन (Al-hazen) के नाम से जानती है।

इनकी पुस्तक ऑप्टिक्स (किताब अल-मनिरिर) ने भौतिक प्रकाशिकी के आधुनिक विज्ञान के लिए मार्ग प्रशस्त किया। वर्ष 2015 में यूनेस्को ने उनके योगदान को स्वीकार करते हुए उनके

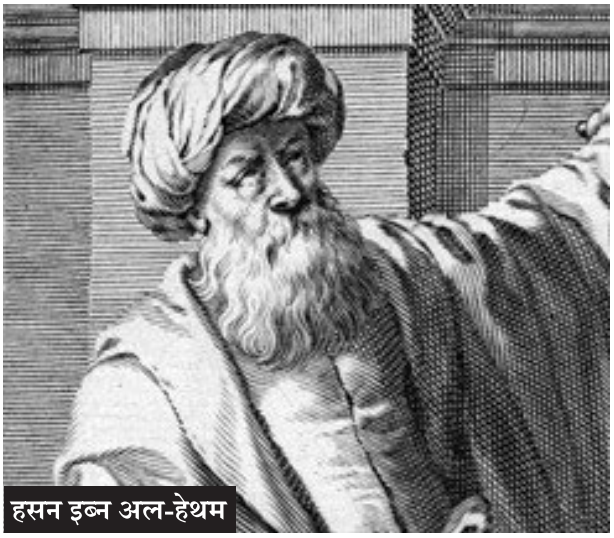
हसन इब्न अल-हेथम

चित्रों के साथ एक वर्ष तक उनके बारे में कैंपेन चलाया।

उक्त विज्ञानियों के अलावा भी ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले मुस्लिम विज्ञानियों की सूची बहुत लंबी है। एक सुप्रसिद्ध पुस्तक है "1001 आविष्कार" (1001 inventions), यह पुस्तक इस्लामी इतिहास के मुस्लिम वैज्ञानिकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां प्रस्तुत करती है। इसमें मुस्लिम वैज्ञानिकों द्वारा किए गए उन सभी आविष्कारों का उल्लेख है, जिन्होंने पश्चिमी सभ्यता और शेष विश्व के आज के जीवन-यापन पर प्रभाव डाला। इग्लैंड में रह रहे दक्षिण एशियाई मूल के विद्धान प्रोफ़ेसर सालिम द्वारा लिखित यह एक महत्वपूर्ण संदर्भ पुस्तिका है।

ज्ञान-विज्ञान की प्रत्येक विधा की गहराई में मुस्लिम विद्धानों का योगदान आज भी नज़र आता है। यह इस्लाम के स्वर्णिम युग की विशेषता है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में इस्लामी इतिहास के स्वर्णिम युग के उक्त मुस्लिम विज्ञानियों के योगदान को पूरी दुनिया स्वीकार करती है। इनके अलावा भी इस युग के मुस्लिम विज्ञानियों की सूची बहुत लंबी है। ज्ञान-विज्ञान के साथ ही आमतौर पर ये विद्वान धर्मशास्त्र के भी ज्ञाता हुआ करते थे। ये था इस्लाम का स्वर्णिम युग।

इ स के बाद इस्लाम के इस स्वर्णिम युग का पतन शुरू हुआ। हम जानते हैं कि इतिहास में ऐसी बड़ी-बड़ी विभिन्न घटनाएं हुईं जहां से इस्लाम के इस स्वर्णिम युग का पतन शुरू हुआ। मिसाल के तौर पर अब्बासिया दौर का ख़ात्मा मंगोलों के आक्रमण से हुआ। यह आक्रमण इस्लामी इतिहास का सबसे बड़ा झटका था। आक्रमणकारियों ने "बैतुल हिकमह" को नष्ट कर दिया। इतनी संख्या और मात्रा में किताबें दजला नदी (टाइग्रिस रिवर) में फेंक दी गईं कि उनकी स्याही से नदी का पानी काला हो गया। इस आक्रमण से न केवल ज्ञान-विज्ञान बल्कि मुस्लिम जीवन और संपत्ति का बड़े पैमाने पर विनाश किया गया। पुस्तकालय, मस्जिदें, हस्पताल, महल और अन्य महान इमारतें जला दी गईं। यदि इस्लामी इतिहास के इस स्वर्णिम युग के पतन के कारणों पर ग़ौर करे तो...क्रमशः... ■■

(मीडिया सचिव (JIH) सुहैल के.के. के व्याख्यान पर आधारित)

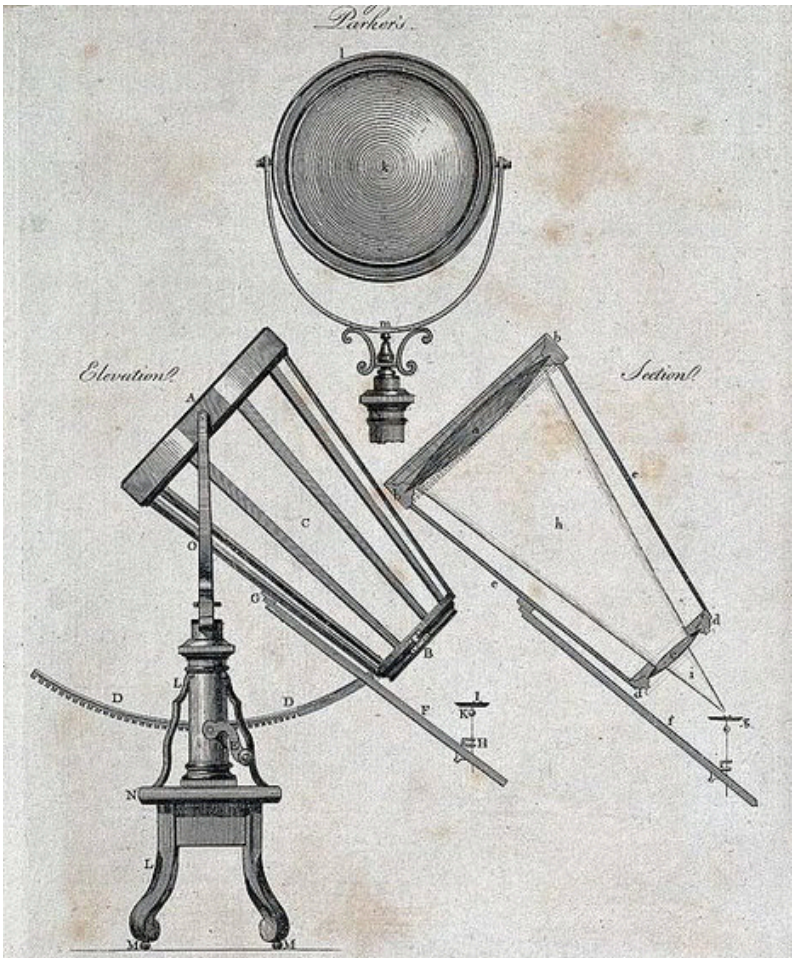

ओटीटी : मनोरंजन या मनोविकार?



मंथन



नईम अलहिन्दी

आज हम एक डिजीटल युग में जी रहे हैं, जहां ट्विटर, व्हाट्सएप, फेसबुक और इस जैसे न जाने कितने ही प्लेटफॉर्म हमें पूरी दुनिया से जोड़ते हैं और हमें अपनी राय व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। इसके अलावा जहां हम एक क्लिक पर किसी भी प्रकार की फ़िल्में और टेलीविज़न शो देख सकते हैं। दुनिया भर में तकनीकी के विस्तार के साथ जैसे-जैसे इस तक लोगों की पहुंच का दायरा बढ़ रहा है, वैसे-वैसे इसका असर भी साफ़ देखा जा सकता है। विशेषकर मनोरंजन के माध्यम के रूप में पिछले कुछ वर्षों के दौरान इंटरनेट पर 'ओवर द टॉप' यानी ओटीटी मंचों का प्रसार तेज़ी से हुआ और कंप्यूटर के अलावा ज़्यादातर लोगों के पास स्मार्टफ़ोन होने की वजह से इस पर प्रसारित सामग्रियों तक लोगों की पहुंच आसान हो गई है।

अमेजन प्राइम, नेटफ्लिक्स, डिज्नी हॉटस्टार आदि ओटीटी प्लेटफॉर्म्स घर-घर तक पहुंच चुके हैं, लेकिन धीरे-धीरे यह महसूस किया जाने लगा कि ओटीटी पर उपलब्ध बहुत सारी सामग्रियां अश्लील, अमर्यादित और अशोभनीय हैं। देश में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के लिए कोई क़ानून या नियम नहीं हैं, क्योंकि यह एक नया माध्यम है। ओटीटी एक ऐसा मंच है जो इंटरनेट पर सामग्री की वीडियो और ऑडियो स्ट्रीमिंग प्रदान करता है। इसने केबल ऑपरेटरों, सैटेलाइट कनेक्शन या प्रसारण माध्यमों के किसी भी हस्तक्षेप को हटा दिया है।

पिछले कुछ वर्षों से हमारे देश में भी ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने बड़ा ज़ोर पकड़ा है। इसने टीवी और सिनेमा पर निर्भर रहने वाले दर्शकों को इंटरनेट के माध्यम से स्मार्टफ़ोन और स्मार्ट टीवी पर वीडियो देखने का एक नया विकल्प दिया है। वहां ऐसी सामग्रियों की भरमार है, जिसमें अश्लीलता, गाली-गलौज, नशा, हिंसा, पूर्वाग्रह से भरी सामग्रियों

दरअस्ल, आज कई ओटीटी मंचों पर प्रस्तुत फिल्मों या सीरीज में जैसी सामग्रियां परोसी जा रही हैं, उसके पीछे कोई तर्क नहीं है। कलात्मकता, भदेसपन और खुलेपन के नाम पर जैसी भाषा और जैसे दृश्य प्रदर्शित किए जाते हैं, वह पूरी तरह से अर्मयादित होते हैं। आज स्मार्टफोन और अन्य संसाधनों तक पहुंच की वजह से बहुत सारे बच्चे भी ओटीटी मंचों पर फिल्में या सीरीज को देखने में दिलचस्पी लेते हैं।

को धड़ल्ले से परोसा जाता है। कई बार इस पर भावनाओं को आहत करने के भी आरोप लगे हैं, जिसके बाद विरोध और विवाद हुए। इन्हीं सबके बीच इन प्लेटफॉर्म्स पर परोसी जाने वाली सामग्रियों की निगरानी और उनके नियमन की बातें भी उठीं, लेकिन यह नियमन कौन करेगा इसे लेकर सहमति नहीं हो पाती।

नेटफ्लिक्स और अमेज़ॅन जैसे प्लेटफॉर्मों पर अश्लीलता और नग्नता

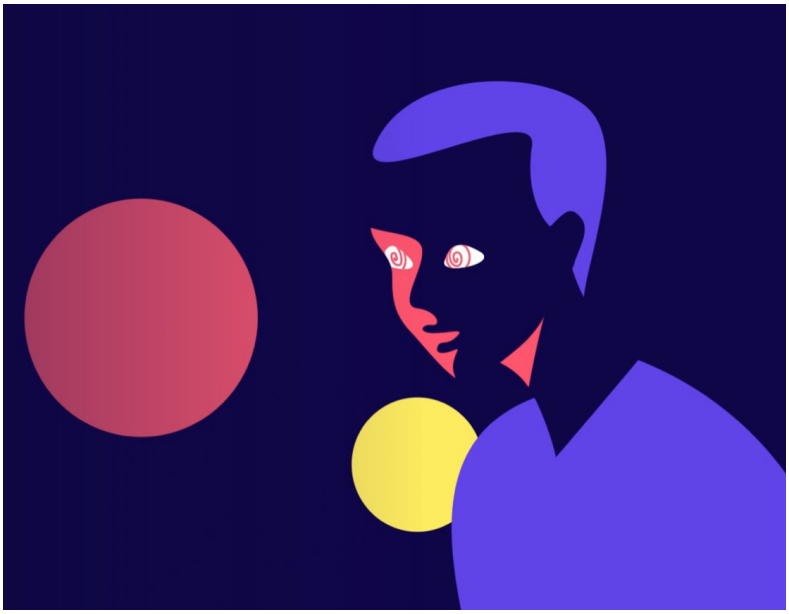

का प्रसार बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इन प्लेटफॉर्मों पर प्रदर्शित फ़िल्में और शो उन प्रस्तुतियों से काफ़ी भिन्न होते हैं, जिन्हें हम सिनेमा घरों में देखते हैं। सिनेमा घरों में फ़िल्मों को प्रमाणित और पूर्व-स्क्रीन किया जाता है, जबकि ओटीटी प्लेटफॉर्मों के लिए ऐसा नहीं है।

ओटीटी ऐप के माध्यम से कोई भी कार्यक्रम या फ़िल्में इन्टरनेट पर डायरेक्ट रिलीज़ की जाती हैं। इन पर कोई भी लगाम नहीं होता न ही कोई सेंसर बोर्ड की पूर्व अनुमति लेनी होती है। किसी भी विषय पर वीडियो स्ट्रीमिंग की जाती है। इन पर कोई लगाम न होने के कारण मनोरंजन के नाम पर कुछ भी परोस दिया जा रहा है। इन मंचों से अनियंत्रित रूप से अश्लीलता को दिखाया जा रहा जो कि भारतीय संस्कृति और समाज के अनुकूल नहीं है। यह लोगों की सोचने-समझने की प्रक्रिया को दूषित कर रहा है।

इसका एक चिंताजनक प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है, जो अनजाने ही अवांछित सामग्रियों के संपर्क में आ जाते हैं। ऐसे में इस तरह की दूषित और निंदनीय सामग्रियों को देखकर आज के छोटे बच्चे, जो स्कूल के छात्र हैं, उनके चरित्र और नैतिक मूल्यों का ह्रास होगा तथा वे संस्कारहीन रहेंगे।

शायद यही वजह है कि हाल ही में दिल्ली हाईकोर्ट ने इस मसले पर कहा था कि सोशल मीडिया और ओटीटी मंचों पर विषय-वस्तु को विनियमित करने के लिए नियम और दिशा-निर्देश तैयार करने पर तुरंत ध्यान देने की ज़रूरत है। अदालत ने सार्वजनिक और सोशल मीडिया मंचों पर अश्लील भाषा को गंभीरता से लेने को रेखांकित किया

था, जो कम उम्र के बच्चों के लिए भी आसानी से सुलभ हैं। इसी संदर्भ में अब केंद्र सरकार ने दिल्ली उच्च न्यायालय को आश्वासन दिया है कि सोशल मीडिया मंचों और मध्यवर्ती संस्थाओं को नियंत्रित करने वाली उसकी नीति में आवश्यक नियम और विनिमय शामिल होंगे कि ये मंच अश्लील भाषा और अपवित्र आचरण से मुक्त हों।

दरअसल, आज कई ओटीटी मंचों पर प्रस्तुत फ़िल्मों या सीरीज़ में जैसी सामग्रियां परोसी जा रही हैं, उसके पीछे कोई तर्क नहीं है। कलात्मकता, भदेसपन और खुलेपन के नाम पर जैसी भाषा और जैसे दृश्य प्रदर्शित किए जाते हैं, वह पूरी तरह से अमर्यादित होते हैं। आज स्मार्टफ़ोन और अन्य संसाधनों तक पहुंच की वजह से बहुत सारे बच्चे भी ओटीटी मंचों पर फ़िल्में या सीरीज़ को देखने में दिलचस्पी लेते हैं।



यह ध्यान रखने की ज़रूरत है कि बच्चों का कोमल मन-मस्तिष्क ऐसी संवेदनशील प्रस्तुतियों से गहरे तक प्रभावित होता है। ऐसे में अश्लील भाषा या सामग्रियों के ज़रिए उनके भीतर कैसी सोच-समझ बनती होगी? इसलिए इस मसले पर अदालत की चिंता और केंद्र सरकार के रुख़ के बाद उम्मीद की जानी चाहिए कि इस दिशा में ठोस मानक तैयार किए जाएंगे, जो अभिव्यक्ति की आज़ादी को बाधित किए बिना भी लोगों और समाज को आगे ले जाने में मददगार साबित हों।

इस सन्दर्भ में सरकार को कुछ सख़्त नीति बनानी चाहिए, जिससे इस तरह की प्रस्तुतियों को प्रतिबन्ध या नियंत्रिण किया जा सके। देश के छात्रों और युवाओं के चरित्र, संस्कार, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का ह्रास न हो इस बात को ध्यान में रखकर मुखर रूप से हमें इस मुद्दे को उठाने की ज़रूरत है। ताकि उनमें मानवीय मूल्यों तथा नैतिकता का विकास हो और उनका भविष्य सुनहरा हो सके।

अश्लील फ़िल्म, अश्लील आर्ट या अश्लील लेख लिखने वालों को यह समझ लेना चाहिए कि हर विषय पर स्वतंत्रता की एक सीमा होती है और उसके लिए एक मर्यादा के दायरे की ज़रूरत होती है। ओटीटी माध्यमों की पहुंच और प्रभाव को देखते हुए इस उद्योग और सरकार को मिल-जुलकर इस दिशा में कोई व्यवस्था तय करनी चाहिए। ■■

Name: KANTI
Pay Directly to: kanti8920589292@indianbk

कान्ति के वे सब्सक्राइबर
जिन्होंने अभी तक अपनी ख़रीदारी
की रक़म जमा नहीं की है,
बराय मेहरबानी
इस QR Code
के ज़रिये जल्द अदायगी करें।

नोट : अदायगी के बाद स्क्रीनशॉट
इस नम्बर पर (9818799223) ज़रूर भेजें।

प्रदूषण के कारण घटती जीवन प्रत्याशा



पर्यावरण



जितेंद्र गौतम

यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो के एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट ने अपनी हालिया रिपोर्ट में प्रदूषण के कारण घटती जीवन प्रत्याशा के संबंध में भारत से जुड़े जो तथ्य बताये हैं, वह देश के लिए किसी चेतावनी से कम नहीं है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले द लांसेट में एक शोध छपा था, जिसके अनुसार, वर्ष 2019 में भारत में वायु प्रदूषण से 16.7 लोगों की मौत हुई थी, जबकि एअर क्वालिटी लाइफ़ इंडेक्स (एकक्यूएलआई) के आधार पर तैयार की गई इस ताज़ा रिपोर्ट में भारत को बांग्लादेश के बाद दूसरा सबसे प्रदूषित देश और दिल्ली को दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी बताया गया है।

यह रिपोर्ट यह भी बताती है कि वर्ष 2013 से दुनिया में प्रदूषण में हुई वृद्धि में अकेले भारत की हिस्सेदारी 59 प्रतिशत है। रिपोर्ट डब्ल्यूएचओ के हवाले से बताती है कि पीएम (पार्टिकुलेट मैटर) 2.5 के कारण भारत में लोगों की औसत उम्र 5.3 साल कम हो रही है, जबकि दिल्ली में प्रदूषण का यही हाल रहा, तो एक करोड़ 80 लाख लोगों की उम्र 11.9 साल कम रह जाएगी। रिपोर्ट बताती है कि देश में 130 करोड़ लोग ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं, जहां सालाना प्रदूषण स्तर डब्ल्यूएचओ के मानक से कहीं अधिक है। उत्तर के मैदानी इलाक़ों को सबसे प्रदूषित आंका गया है, क्योंकि वहां आबादी का घनत्व देश के बाक़ी हिस्सों से तीन गुना अधिक है। स्थिति की भीषणता का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि देश के सबसे कम प्रदूषित ज़िले पठानकोट में भी सूक्ष्म कणों का प्रदूषण डब्ल्यूएचओ की सीमा से सात गुना ज़्यादा है।

माना जाता है कि पर्यावरण प्रदूषण में सर्वाधिक योगदान औद्योगिक इकाइयों का होता है। ये इकाइयां वायु और जल प्रदूषण की सबसे बड़ी कारक

हैं। तेल, डीजल या लकड़ी के दहन से उत्सर्जित जिस पीएम (पार्टिकुलेट मैटर) 2.5 को पर्यावरण के लिए बेहद ख़तरनाक माना जाता है और जो फेफड़ों को भारी नुक़सान पहुंचाता है, उसी की अधिकता से भारत में स्थिति बिगड़ रही है।

भारत में पर्यावरण प्रदूषण ने ऐसे आघात किए हैं कि हमारी फ़सलों की गुणवत्ता कम हो रही है। पिछले साल के शुरू में जब गेहूं पका तो असाधारण, अकल्पनीय जलवायु परिवर्तन ने दाने को इस प्रकार ज़ीरे के दाने जितना कम कर दिया कि उसकी नियमित ख़रीद ही संकट में पड़ गई। जब धान कट रहा था, तो उसमें भी मूसलाधार बारिश से असाधारण नमी पैदा कर उसकी गुणवत्ता को नुक़सान पहुंचाया।



भारत ही नहीं इस समय पूरी दुनिया ही संकट के मुहाने पर खड़ी है। आज पर्यावरण प्रदूषण विश्व की विकराल और ज्वलंत समस्या है। यूएनईपी (संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम) की गैस उत्सर्जन रिपोर्ट बताती है कि अगर ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन यूं ही होता रहा तो इस सदी के अंत तक या 2100 में धरती का तापमान 2.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाएगा, जबकि यह 1.50 डिग्री से ज़्यादा नहीं बढ़ना चाहिए, नहीं तो यह धरती रहने के क़ाबिल नहीं रह जाएगी।

ऐसी हालत में इस आसन्न आपात मृत्यु से बचने के लिए एक ही रास्ता रह जाता है कि दुनिया के सभी देश बिना कोई राजनीति किए, अपना दायित्व दूसरे पर धकेलने की चेष्टा किए बग़ैर पर्यावरण प्रदूषण का मुक़ाबला किया जाए, क्योंकि अब हम आत्मघात के रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं।

इस समय भारत में जलवायु का जो स्तर हमारे सामने है, उसने इस तरह के अनिश्चित परिवर्तन कर दिए हैं कि आम लोगों का जीना दूभर हो गया है। मौसम का मिज़ाज दिन-प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है।

हालांकि पर्यावरण प्रदूषण से जूझने के लिए कई मोर्चों पर जंग जारी है। वर्ष 2019 में नेशनल क्लीन एअर प्रोग्राम (एनसीएपी) की शुरुआत की गई, जिसका लक्ष्य वर्ष 2026 तक शहरों में वायु प्रदूषण के स्तर को 40 प्रतिशत तक कम करना है। देश में एथनॉल से चलने वाली पहली कार लॉन्च हुई है तथा जी-20 की बैठक में जलवायु परिवर्तन से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले असर के मुद्दे को शामिल किया गया। ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन की दर में कमी लाने के लिए मज़बूत उपायों की बात कही गई, लेकिन इस दिशा में क़दम बढ़ते नज़र नहीं आ रहे।

भारत के संबंध में जैसा कि यह रिपोर्ट कहती है, तो फिर इससे लड़ने के लिए युद्ध स्तर पर क़दम उठाने की ज़रूरत है। अगर अब भी पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के उपाय नहीं किए जाते और कोई ठोस व्यवस्था सामने नहीं आती, तो जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण से पैदा होने वाले संकट से बचा नहीं जा सकेगा। इससे संबंधित आशंकाएं परेशान करती हैं।

इस प्रदूषण ने तो ज़रूरत से ज़्यादा धधकती हुई धरती और अनिश्चित जलवायु परिवर्तन के साथ ऐसी घुटन, धुंध और अस्वस्थ जलवायु परिवर्तन पैदा कर दिया है कि भारत में औसत आयु बढ़ने के बजाय घट रही है। जो नौनिहाल हमारी धरती पर जन्म ले रहे हैं, वे कुपोषित और नाटे हैं। इसीलिए आने वाली बीमारियों का सही ढंग से मुक़ाबला नहीं कर पाते। यदि पर्यावरण प्रदूषण जलवायु में इसी प्रकार अनिश्चित और घातक परिवर्तन लाता रहेगा, तो बाद में जीवन का कोई अर्थ नहीं रहेगा। इसलिए ज़रूरी है कि जो औद्योगिक इकाइयां पर्यावरण संरक्षण संबंधी अपनी ज़िम्मेदारियों का स्वयं निर्वहन न करें, उनके प्रति सरकार कंपनी अधिनियम और पर्यावरण सरंक्षण से जुड़े क़ानूनों के अंतर्गत दायित्व निर्वाह हेतु ठोस कार्रवाई करे। विकास के नाम पर सरकारें औद्योगिक इकाइयों को पर्यावरण प्रदूषण रोकथाम के उपाय न करने की कोई छूट न दें।

कोई भी व्यावसायिक या आर्थिक गतिविधि मानव जीवन से बड़ी नहीं हो सकती, इसलिए पर्यावरण संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास किया जाना अनिवार्य है। हमारे लिए यह बेहद ज़रूरी है कि हम कार्बन उत्सर्जन में कमी लाएं और सबके साथ मिलकर मानवता को नष्ट होने से बचाएं। ■■

साधारण सिरदर्द नहीं है माइग्रेन



यदि आपको सिर के केवल एक तरफ़ सिरदर्द महसूस हो रहा है, तो आप माइग्रेन से पीड़ित हो सकते हैं। नियमित सिरदर्द और माइग्रेन के बीच अंतर जानना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे यह निर्धारित करने में मदद मिलेगी कि कौन-सा उपचार विकल्प आपके लिए सबसे उपयुक्त है। यदि अनिश्चित हो या आपको माइग्रेन का संदेह हो तो चिकित्सीय सलाह लें।

माइग्रेन का सिरदर्द क्या है ?

माइग्रेन तनाव या क्लस्टर सिरदर्द से भिन्न होता है। माइग्रेन ट्रस्ट के अनुसार, यह एक जटिल स्थिति है जो विभिन्न प्रकार के लक्षणों के साथ प्रस्तुत होती है। कुछ लोगों को केवल सिरदर्द का अनुभव हो सकता है, जबकि अन्य को बीमार और मिचली भी महसूस हो सकती है और कुछ मामलों में यह भी पता चलता है कि उनकी दृष्टि में कुछ गड़बड़ है। माइग्रेन से दुनिया की लगभग 12 प्रतिशत आबादी प्रभावित है और यह वैश्विक स्तर पर तीसरी सबसे आम बीमारी है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं को माइग्रेन से पीड़ित होने की संभावना लगभग तीन गुना अधिक होती है।



माइग्रेन आम तौर पर जीवन के लिए ख़तरा नहीं होता है, लेकिन यह गंभीर दर्द का कारण बनता है, जिसका अगर तुरंत समाधान न किया जाए, तो यह कई घंटों और कभी-कभी कई दिनों तक भी बना रह सकता है।

माइग्रेन के प्रमुख लक्षण

माइग्रेन के अलग-अलग चरण होते हैं और प्रत्येक चरण के साथ कुछ लक्षण जुड़े होते हैं। माइग्रेन सिरदर्द के कुछ सामान्य लक्षण होते हैं :

1. अक्सर एक तरफ़ा धड़कन या धड़कते हुए दर्द
2. प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता
3. उल्टी

माइग्रेन नियमित तनाव सिरदर्द की तुलना में अधिक तीव्र दर्द से जुड़ा होता है। दर्द अक्सर तेज़ होता है और हिलने-डुलने से यह और भी बदतर हो सकता है। माइग्रेन के सामान्य लक्षण, जिन्हें आप अनुभव कर सकते हैं-

- माइग्रेन शुरू होने से दो दिन पहले तक आमतौर पर अस्वस्थता महसूस होना।
- धुंधली दृष्टि या दृश्य गड़बड़ी जैसे चमकती रोशनी।
- प्रकाश, ध्वनि या कुछ गंधों के प्रति संवेदनशीलता।
- मतली महसूस होना

माइग्रेन चरण

माइग्रेन के कारण तेज़ सिरदर्द, चक्कर आना और मतली होती है। आभा या दृष्टि में व्यवधान एक चेतावनी संकेत हो सकता है कि माइग्रेन शुरू होने वाला है।

प्राथमिक अवस्था : कई तीव्र और दीर्घकालिक माइग्रेन पीड़ितों को माइग्रेन का सिरदर्द होने से एक या दो दिन पहले कुछ लक्षण दिखाई देते हैं। इस अवधि को प्रोड्रोम चरण कहा जाता है। इस चरण के दौरान, आपको निम्नलिखित लक्षण दिखाई दे सकते हैं-

• क़ब्ज़ • अवसाद या मूड में बदलाव • अधिक तीव्र भोजन की

लालसा • एक सख़्त गर्दन • पेशाब का बढ़ना • थकान बढ़ना • चिड़चिड़ापन

लगभग 25 प्रतिशत माइग्रेन रोगियों को आभा 4 प्राप्त होती है। लोग अक्सर आभा का वर्णन प्रकाश की चमक या आंखों के सामने दिखाई देने वाले चमकीले धब्बों के रूप में करते हैं। वे आमतौर पर 30 मिनट के भीतर चले जाते हैं। आभा के अन्य विशिष्ट लक्षण हैं-

• प्रकाश की आकृतियां या चमक देखना • दृष्टि की अस्थायी हानि • बोलने में कठिनाई • चेहरे या हाथ या पैर में झुनझुनी सनसनी।

द्वितीय चरण : आभा आमतौर पर एक मज़बूत संकेत है कि माइग्रेन का दौरा शुरू होने वाला है। माइग्रेन का आक्रमण चरण तब होता है जब सिर में दर्द होता है। यह दर्द धड़क रहा हो सकता है, धड़कने वाला हो सकता है, या तेज़ होने जैसा महसूस हो सकता है। माइग्रेन का दर्द गंभीर होता है और लोगों को अक्सर तत्काल दर्द उपचार और बिस्तर पर आराम की आवश्यकता होती है। माइग्रेन अटैक के अन्य लक्षण हैं :

• जी मिचलाना • उल्टी आना • चक्कर आना • बेहोश होने जैसा • सिर के एक तरफ़ या माथे में सिरदर्द।

अंतिम चरण : पोस्ट्ड्रोम चरण माइग्रेन का अंतिम चरण है। इस चरण के दौरान, लोगों को अक्सर ये लक्षण दिखाई देते हैं-

• मनोदशा में बदलाव • थकान • हल्का सिरदर्द • बिना सिरदर्द वाला माइग्रेन।

कुछ लोगों को बिना सिरदर्द के भी माइग्रेन हो जाता है। इन्हें साइलेंट या दर्द रहित माइग्रेन भी कहा जाता है। जिन लोगों को इस प्रकार के माइग्रेन होते हैं उनमें आमतौर पर आभा होती है। साइलेंट माइग्रेन के अन्य लक्षण क्लासिक माइग्रेन के समान होते हैं, लेकिन सिर में कोई दर्द नहीं होता है-

• आभा • धुंधली नज़र • प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता • चक्कर आना और मतली • उल्टी आना

माइग्रेन के कारण

शोधकर्ता पूरी तरह से निश्चित नहीं हैं कि माइग्रेन क्यों होता है, लेकिन कई अलग-अलग चीज़ें हैं जो माइग्रेन को ट्रिगर कर सकती हैं। हालांकि माइग्रेन के सटीक कारणों को अच्छी तरह से समझा नहीं जा सका है, लेकिन यह स्थिति परिवारों में बनी रहती है।

"माइग्रेन आम तौर पर जीवन के लिए ख़तरा नहीं होता है, लेकिन यह गंभीर दर्द का कारण बनता है, जिसका अगर तुरंत समाधान न किया जाए, तो यह कई घंटों और कभी-कभी कई दिनों तक भी बना रह सकता है।"

जो लोग माइग्रेन से पीड़ित हैं उन्हें यह महीने में एक या दो बार होता है। यदि यह प्रति माह कम से कम 15 दिन रहता है, तो आपको क्रोनिक माइग्रेन हो सकता है। माइग्रेन के कारणों का पता लगाने के लिए शोधकर्ता अपनी खोज में हार्मोन्स और मस्तिष्क के कुछ जैव रसायन जैसे कुछ कारकों की खोज कर रहे हैं।

किसी व्यक्ति की जीवनशैली और प्रत्यक्ष वातावरण में कई कारकों के कारण माइग्रेन हो सकता है। नीचे कुछ सबसे सामान्य ट्रिगर दिए गए हैं जिनकी पहचान माइग्रेन की शुरुआत में योगदान करने के लिए की गई है। यह पहचानने में सहायता के लिए कि आपके माइग्रेन में क्या योगदान है, इन चीज़ों से बचने का प्रयास करें-

• शराब • बड़ी मात्रा में पनीर, चॉकलेट और खट्टे फल • असंतुलित भोजन • लंबे समय तक तनाव और अत्यधिक उत्तेजना • नींद की कमी के कारण थकान होना • तेज़ या टिमटिमाती रोशनी, तेज़ गंध या तेज़ आवाज़ के संपर्क में आना।

माइग्रेन का इलाज

माइग्रेन के लिए कई अलग-अलग उपचार उपलब्ध हैं। लेकिन भविष्य में हमलों से बचने के लिए अपने ट्रिगर्स को सीखना सबसे अच्छा है। अधिकांश माइग्रेन उपचार विकल्पों का उद्देश्य लक्षणों और दर्द से राहत पाना है। माइग्रेन के लक्षणों से राहत पाने के लिए कई प्राकृतिक विकल्प हैं, हालांकि, यदि आप लगातार या बार-बार माइग्रेन सिरदर्द का अनुभव कर रहे हैं तो अपने स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर से परामर्श करना सबसे अच्छा है। वे जीवनशैली में बदलाव का सुझाव दे सकते हैं, जिनमें शामिल हैं-

• तनाव में कमी • माइग्रेन ट्रिगर से बचना • हार्मोन थेरेपी • बायोफीडबैक • ध्यान • एक्यूपंक्चर

माइग्रेन के लक्षण कुछ घंटों से लेकर कुछ दिनों तक रह सकते हैं और दौर दोबारा भी पड़ सकते हैं। सौभाग्य से, ऐसे कई प्रबंधन विकल्प हैं जो माइग्रेन की गंभीरता और पुनरावृत्ति को कम करने में काफ़ी हद तक आपकी मदद कर सकते हैं। इस संबंध में स्वास्थ्य विशेषज्ञों से परामर्श सबसे अच्छा विकल्प है। ■■



ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स कर बनाएं एक शानदार करियर

करियर



संपादन प्रभाग

"क़लम तलवार से अधिक शक्तिशाली है।'' ("The pen is mightier than the sword.") वर्ष 1839 में अंग्रेज़ी लेखक एडवर्ड बुलवर लिटन द्वारा लिखी यह लाइन यह कहती है कि हिंसा की तुलना में मीडिया की पावर ही काफ़ी है। सत्य भी है, एक पत्रकार की छोटी-सी ख़बर, बड़ी से बड़ी भ्रष्टाचारी सत्ता को हिला कर रख देती है। वर्तमान में संचार मीडिया में आए ज़बरदस्त विकास से पत्रकारिता सबसे रचनात्मक और आकर्षक क्षेत्र में से एक है। हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जहां मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। स्वाभाविक रूप से, अधिक से अधिक युवा पत्रकारिता में अपना करियर बनाना चाहते हैं। एक अच्छी सैलरी के साथ पत्रकारिता हज़ारों युवाओं को रोज़गार प्रदान कर रहा है। ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स के अंतर्गत आप अपनी पसंद के अनुसार पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्र में

कोर्स का स्तर	अंडर ग्रेजुएट
योग्यता मानदंड	10+2
प्रवेश का मानदंड	प्रवेश परीक्षा
जॉब प्रोफ़ाइल्स	फ़ोटो पत्रकार, रिसर्चर कॉपीराइट, एडिटर, रिपोर्टर
औसत वार्षिक वेतन	INR 8-10 लाख लगभग



पत्रकारिता एक प्रभावी करियर विकल्प के रूप में निखरकर आया है। यदि आप भी पत्रकार बनना चाहते हैं और 10वीं या 12वीं के बाद एक अच्छा करियर विकल्प चुनना चाहते हैं, तो आपको ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स के बारे में विचार करना चाहिए। तो आइए जानते हैं ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स के बारे में।

ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स क्या हैं?

अपने करियर का निर्माण कर सकते हैं। ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स जनसंचार के विषयों में से एक है जिसमें इसके इच्छुक छात्रों को रिसर्च करने, समाचार बनाने और दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। जो छात्र ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स का अनुसरण करना चाहते हैं, उन्हें आवेदन करने के लिए न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक

आवश्यक हैं।

ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स क्यों चुनें?

ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स में करियर, उम्मीदवारों के लिए एक अत्यधिक आकर्षक विकल्प है क्योंकि यह दूसरों की तुलना में वेतन और करियर में प्रगति के अधिक विकल्प प्रदान करता है-

• पत्रकारिता कोर्स के क्षेत्र में उम्मीदवार मीडिया और मनोरंजन इंडस्ट्रीज़ में काम कर सकते हैं। दैनिक अख़बार हिंदू की एक रिपोर्ट के अनुसार आने वाले 3 वर्षों में मीडिया और मनोरंजन उद्योग से 2.7 लाख से अधिक



नौकरियां मिलने की उम्मीद है, इस प्रकार ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स के ज़रिये उम्मीदवारों को रोज़गार के नए अवसर मिलेंगे।

• कोर्स पूरा होने के बाद उम्मीदवार विभिन्न प्रोफाइलों को अपना सकते हैं जिसमें न्यूज़ रिपोर्टर, राइटर, एसोसिएट एडिटर, प्रूफ़रीडर, क्रिटिक, फ़ोटो जर्नलिस्ट आदि शामिल हैं। भारत में पत्रकारों को अच्छे वेतन दिए जाते हैं और कुछ सबसे बड़े मीडिया हाउस में काम करने का अवसर मिलता है जिसमें Times of India, ABP News, Zee Network, NDTV आदि शामिल हैं।

• पत्रकार का जॉब प्रोफाइल थोड़ा चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि उन्हें बार-बार यात्रा करना और कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि क्राइम का पर्दाफाश, प्राकृतिक आपदा, स्टिंग ऑपरेशन आदि। हालांकि, एक अच्छी रिपोर्ट लाने से निश्चित संतुष्टि भी मिलती है। करियर एक्सप्लोरर वेबसाइट के अनुसार, दुनिया भर के पत्रकार अपनी नौकरी की संतुष्टि को 5 में से 3.4 के रूप में रेट करते हैं, जो किसी भी करियर में सबसे ज़्यादा है।

• ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स का उद्देश्य छात्रों में अच्छे कम्युनिकेशन स्किल और क्रिएटिव स्किल सिखाना है जो उन्हें लेखन के क्षेत्र में नौकरी खोजने और उनके कम्युनिकेशन स्किल को बढ़ाने में मदद करता है।

ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स के लिए आवश्यक कौशल

पत्रकार बनने के आपके अवलोकन, जुनून के साथ-साथ आपमें कुछ कौशल भी होना चाहिए, जिससे आप एक अच्छे पत्रकार बन सकें। ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स के लिए कुछ ज़रूरी स्किल्स-

• **संचार स्किल :** एक अच्छा पत्रकार बनने के लिए मौखिक और लिखित संचार स्किल की बहुत ही ज़्यादा ज़रूरत है। इंटरव्यूज़ में, जानकारी एकत्रित करते समय नए-नए लोगों से मिलेंगे। जब आप उनसे अच्छी तरह संवाद कर पाएंगे तभी आप सही इन्फॉर्मेशन दुनिया के सामने ला सकते हैं।

• **दृढ़ता :** एक पत्रकार के रूप में, यह हमेशा नहीं होता कि आपके सोर्स बात करने के लिए तैयार होंगे या आपको वह जानकारी देंगे जिसकी आपको ज़रूरत है। उस वक़्त यह इम्पोर्टेन्ट है कि आप अड़े रहें और कहानी में बने रहें। एक सफल पत्रकार वे होते हैं जो यूनिक और एक्सक्लूसिव और नई रिपोर्ट करते हैं।

• **रिसर्च स्किल्स :** एक पत्रकार को सही इंफॉर्मेशन प्राप्त करने के लिए सभी डिटेल्स को प्राप्त करने की ज़रूरत होती है। हर छोटी से छोटी डिटेल्स को जनता के सामने लाने के लिए एक पत्रकार के पास अच्छी रिसर्च स्किल्स का होना बेहद ज़रूरी है।

• **डिजिटल नॉलेज :** एक पत्रकार बनने के लिए आपको पता होना चाहिए कि वेबसाइट, एपलीकेशन, सोशल मीडिया, लेपटॉप और टेबलेट जैसी डिवाइस का उपयोग कैसे किया जाता है, क्योंकि ये नए ब्रॉडकास्ट मीडिया हैं। न्यूज़ ब्रॉडकास्ट करने के लिए डिजिटल मीडिया का उपयोग करके, लोगों के बड़े समूह तक पहुंचा जा सकता है।

• **प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स :** एक पत्रकार के रूप में, आपको कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, चाहे वह आपके रिपोर्टिंग के समय हो, लाइव शो रिकॉर्डिंग में बहस के दौरान या किसी भी फील्ड में। यह ज़रूरी है कि आपके पास अपने रास्ते में आने वाली किसी भी कठिनाई या चुनौतियों को दूर

करने के लिए समस्या को सुलझाने की स्किल्स होनी चाहिए। आपको प्रॉब्लम को पहचानने और सॉल्यूशन्स खोजने के लिए तैयार रहना चाहिए।

पत्रकारिता कोर्स के प्रकार

पत्रकार के रूप में अपना करियर बनाने में पत्रकारिता में बैचलर डिग्री बहुत ज़रूरी है। 12वीं के बाद पत्रकार बनने के लिए आप पत्रकारिता में कुछ प्रसिद्ध बैचलर कोर्स का चुनाव कर सकते हैं। इसके बाद चाहें तो पत्रकारिता में मास्टर्स करके आप अपनी विशिष्ट क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं।

पत्रकारिता कोर्स के लिए प्रमुख संस्थान

- सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ़ मीडिया एंड कम्युनिकेशन, पुणे
- यूनिवर्सिटी ऑफ़ मीडिया एंड आर्ट्स
- क्राइस्ट कॉलेज, बैंगलोर
- दिल्ली यूनिवर्सिटी ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स, पुणे
- एमिटी यूनिवर्सिटी, मुंबई
- कमला नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
- मद्रास इंस्टिट्यूट कॉलेज
- सावित्री बाई फुले यूनिवर्सिटी, पुणे
- किशनचंद चेल्लाराम कॉलेज
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया, बैंगलोर

ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स के लिए न्यूनतम योग्यता

• उम्मीदवार को किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10+2 की बेसिक स्कूली शिक्षा पूरी करनी चाहिए।

• इस कोर्स के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों के लिए न्यूनतम 50 प्रतिशत कुल अंक आवश्यक हैं।

• भारत में पत्रकारिता कोर्स के लिए कुछ कॉलेज अपनी प्रवेश परीक्षाएं आयोजित करते हैं। (जैसे JMI, DUET और ACJ आदि) जिसके आधार पर छात्रों का चयन किया जाता है। विदेश के कुछ यूनिवर्सिटी के लिए ACT, SAT आदि के स्कोर ज़रूरी होते हैं।

प्रवेश प्रक्रिया

पत्रकारिता कोर्स चुनने के बाद एडमिशन आमतौर पर दो तरीक़ों से हो सकता है-मेरिट और प्रवेश परीक्षा के आधार पर। हर यूनिवर्सिटी में प्रवेश प्रक्रिया अलग-अलग हो सकती है।

• **मेरिट के आधार पर :** कुछ यूनिवर्सिटी में एडमिशन मेरिट पर आधारित होता है। इसमें यूनिवर्सिटी या कॉलेज में योग्यता और कटऑफ़ को पूरा करने वाले आवेदकों को प्रोविजनल प्रवेश की पेशकश की जाती है।

• **प्रवेश परीक्षा के आधार पर :** पत्रकारिता कोर्स में छात्रों को प्रवेश देने के लिए कई कॉलेज और विश्वविद्यालयों द्वारा प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती हैं। प्रवेश प्रक्रिया के लिए उम्मीदवारों को शॉर्टलिस्ट किया जाता है, जिसमें इन प्रवेश परीक्षाओं को पास करने के बाद काउंसलिंग राउंड शामिल हैं।

ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स के बाद करियर स्कोप

जर्नलिज्म के क्षेत्र में करियर विकल्पों को प्रिंट जर्नलिज्म और इलेक्ट्रॉनिक जर्नलिज्म जैसे दो डिवीजनों में बांटा गया है। प्रिंट जर्नलिज्म में पत्रिकाएं, समाचार पत्र, जर्नल, प्रिंट मीडिया एजेंसियां और डाइजेस्ट जैसे कंपोनेंट शामिल हैं। इलेक्ट्रॉनिक जर्नलिज्म में टीवी, इंटरनेट, रेडियो, वेब पत्रकारिता शामिल है, जो जर्नलिज्म के सबसे तेज़ी से विकसित होने वाले डिवीजन में से एक है। इस क्षेत्र से जुड़ने के बाद आप राइटर, एडिटर, फ़ोटोग्राफ़र, वीडियो रिकॉर्डर, स्क्रिप्ट राइटर, असिस्टेंट डायरेक्टर, प्रोड्यूसर और कैमरामैन के रूप में अपना भविष्य बना सकते हैं।

रोज़गार के अवसर	वार्षिक वेतन (INR)
फोटो पत्रकार	7-8 लाख
रिसर्चर	8-10 लाख
कॉपीराइटर	6-8 लाख
पब्लिक रिलेशन स्पेशलिस्ट	10-12 लाख
एडिटर	7-8 लाख
रिपोर्टर	9-10 लाख
सोशल मीडिया स्पेशलिस्ट	4-5 लाख

आमदनी

ऑनलाइन पत्रकारिता कोर्स करने के बाद आपके पास रोज़गार के बेहतरीन अवसर हैं। आप देश-विदेश में करियर बना सकते हैं। Payscale के अनुसार उनका औसत वार्षिक वेतन तय होता।

पत्रकारिता एक करियर विकल्प के रूप में

पत्रकारिता एक सफल और संतोषजनक करियर विकल्प है, लेकिन यह आप पर निर्भर करता है कि आप इस रोल में कितनी अच्छी तरह से फिट बैठते हैं। संचार मीडिया और मीडिया चैनलों की बढ़ती संख्या ने कई युवाओं को अपनी तरफ़ आकर्षित किया है। वर्तमान में पत्रकारों की भारी मांग है। अतः पत्रकारिता एक अच्छा करियर विकल्प है। भारत में एक पत्रकार का औसत वेतन 3.86 लाख प्रति वर्ष है। यह प्रति वर्ष 1.7 लाख रुपये से लेकर 9.91 लाख रुपये प्रति वर्ष तक है, जिसमें साझा लाभ और बोनस शामिल हैं। इस क्षेत्र में एक वर्ष से कम के अनुभव वाले फ्रेशर्स औसतन 3 लाख रुपये प्रति वर्ष कमाते हैं। ■■

विविधा

यूएनएससी में भारत को मिले स्थायी सदस्यता-राष्ट्रपति एर्दोगन



तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तय्यप एर्दोगन ने कहा है कि अगर भारत जैसा देश संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) का स्थायी सदस्य बनता है तो उनके देश को "गर्व" होगा। उन्होंने कहा कि दुनिया, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के पांच स्थायी सदस्यों से भी बहुत बड़ी है।

साथ ही एर्दोगन ने कहा कि सभी ग़ैर-पी5 सदस्यों को बारी-बारी से सुरक्षा परिषद का सदस्य बनने का अवसर मिलना चाहिए। मीडिया ब्रीफिंग में एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने यह टिप्पणी की।

भारत का दृष्टिकोण-2047



25वें डीएस बोर्कर मेमोरियल लेक्चर के दौरान 'भारत का दृष्टिकोण-2047' विषय पर व्याख्यान देते हुए जस्टिस (रिटायर्ड) एपी शाह ने देश के कई ज्वलंत मुद्दों पर महत्वपूर्ण बातें कहीं। उन्होंने कार्यक्रम में देश में मज़बूत होती चरमपंथी विचारधारा पर चिंता जताई जिससे नफ़रत, ध्रुवीकरण और अल्पसंख्यकों, विशेष रूप से मुसलमानों के तिरस्कार की संस्कृति पूरे देश में बढ़ी है। शाह दिल्ली हाईकोर्ट के पूर्व चीफ़ जस्टिस रह चुके हैं और विधि आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी काम कर चुके हैं।

अपने व्याख्यान में उन्होंने, अदालत जैसी औपचारिक संस्थाओं के कमज़ोर होने और उनमें जनता के भरोसे के कम होने पर भी चिंता जताई। शाह ने कहा कि देश में 'असहिष्णु और सांप्रदायिक' ताक़तों के उभार से नफ़रत, ध्रुवीकरण और तिरस्कार की संस्कृति जड़ें जमा रही है।'

बाइबिल या भंडारा धर्म परिवर्तन के लिए 'प्रलोभन' नहीं-इलाहाबाद हाईकोर्ट



धर्म परिवर्तन से सम्बंधित एक मामले की सुनवाई के दौरान उत्तर प्रदेश धर्म परिवर्तन अधिनियम 2021 की व्याख्या करते हुए इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि पवित्र बाइबिल बांटना और भंडारा करना उत्तर प्रदेश ग़ैर-क़ानूनी धर्म परिवर्तन निषेध अधिनियम 2021 के तहत धर्म परिवर्तन के लिए 'प्रलोभन' नहीं है। अदालत ने कहा, "शिकायतकर्ता के पास वर्तमान एफ़आईआर दर्ज करने का कोई अधिकार नहीं है, जैसा कि अधिनियम, 2021 की धारा 4 के तहत प्रावधान किया गया है। लोगों को अच्छी शिक्षाएं देना, पवित्र बाइबिल की किताबें बांटना, बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना, ग्रामीणों की सभा आयोजित करना, भंडारा करना और ग्रामीणों को विवाद न करने और शराब न पीने की हिदायत देना प्रलोभन नहीं है।"

इसरो की निगार शाजी ने बढ़ाया देश का मान





तमिलनाडु के एक शिक्षित मुस्लिम परिवार से संबंध रखने वाली निगार शाजी आदित्य एल1 सन मिशन की प्रमुख हैं। वह वर्तमान में बेंगलुरू में राव अंतरिक्ष केंद्र में 'स्पेस इंफ्रास्ट्रक्चर लो अर्थ ऑर्बिट एंड प्लेनेटरी प्लेटफॉर्म' के लिए कार्यक्रम निदेशक भी हैं।

इसरो द्वारा सूर्य का अध्ययन करने के लिए चल रहे आदित्य एल1 मिशन की प्रोजेक्ट निदेशक, 59 वर्षीय निगार शाजी का मानना है कि माता-पिता को अपने बच्चों को कठिनाइयों का सामना करना सिखाना चाहिए, उनके प्रयासों की सराहना करनी चाहिए और उन्हें यह भी सिखाना चाहिए कि टीम में कैसे काम करना है। एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाली निगार शाजी तमिलनाडु के तेनकासी के सेनगोट्टई क्षेत्र की रहने वाली हैं। वह अपने माता-पिता की तीसरी संतान हैं। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा तेनकासी के एसआरएम गवर्नमेंट गर्ल्स हाईस्कूल में प्राप्त की, जहां से उन्होंने 10वीं और 12वीं कक्षा की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। दोनों परीक्षाओं में वह ज़िले में टॉपर रहीं।

कहानी



कर्मों का फल

मुंशी प्रेमचंद

मुझे हमेशा आदमियों के परखने की सनक रही है और अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि यह अध्ययन जितना मनोरंजक और शिक्षाप्रद है, उतना शायद और कोई अध्ययन न होगा। लेकिन अपने दोस्त लाला साईं दयाल से बहुत अर्से तक दोस्ती और बेतकल्लुफ़ी के सम्बन्ध रहने पर भी मुझे उनकी थाह न मिली। मुझे ऐसे दुर्बल शरीर में ज्ञानियों की-सी शांति और संतोष देखकर आश्चर्य होता था जो एक नाज़ुक पौधे की तरह मुसीबतों के झोंकों में भी अचल और अटल रहता था। ज्यों वह बहुत ही मामूली दरजे का आदमी था जिसमें मानव कमज़ोरियों की कमी न थी। वह वादे बहुत करता था लेकिन उन्हें पूरा करने की ज़रूरत नहीं समझता था। वह मिथ्याभाषी न हो, लेकिन सच्चा भी न था। बेमुरौवत न हो लेकिन उसकी मुरौवत छिपी रहती थी। उसे अपने कर्तव्य पर पाबन्द रखने के लिए दबाव और निगरानी की ज़रूरत थी, किफ़ायतशारी के उसूलों से बेख़बर, मेहनत से जी चुराने वाला, उसूलों का कमज़ोर, एक ढीला-ढाला मामूली आदमी था। लेकिन जब कोई मुसीबत

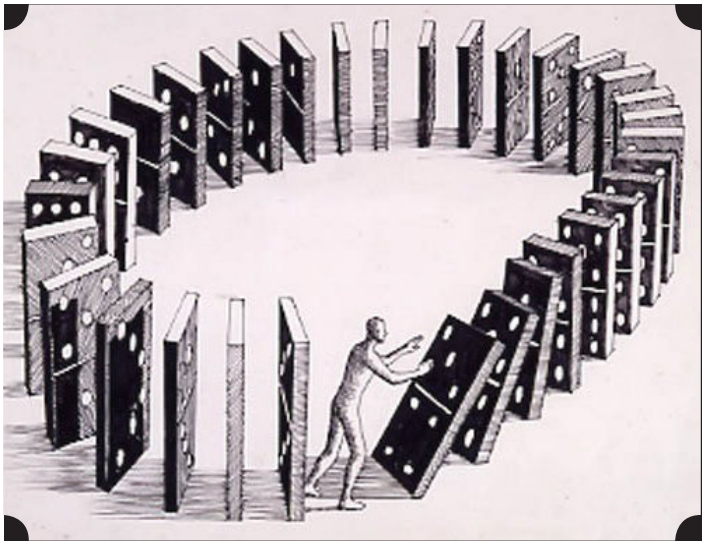

सिर पर आ पड़ती तो उसके दिल में साहस और दृढ़ता की वह ज़बरदस्त ताक़त पैदा हो जाती थी जिसे शहीदों का गुण कह सकते हैं। एक छोटी-सी कपड़े की दुकान के सिवाय कोई जीविका न थी। ऐसी हालतों में उसकी हिम्मत और दृढ़ता का सोता कहां छिपा हुआ है, वहां तक मेरी अन्वेषण-दृष्टि नहीं पहुंचती थी।

बाप के मरते ही मुसीबतों ने उस पर छापा मारा कुछ थोड़ा-सा क़र्ज़ विरासत में मिला जिसमें बराबर बढ़ते रहने की आश्चर्यजनक शक्ति छिपी हुई थी। अदालत के तिलस्मी अहाते में पहुंचते ही यह छोटी-सी हस्ती इस तरह फूली जिस तरह मशक फूलती है। डिग्री हुई। जो कुछ जमा-जथा थी; बर्तन-भांड़े, हांडी-तवा, उसके गहरे पेट में समा गये। मकान भी न बचा। बेचारे मुसीबतों के मारे साईं दयाल का अब कहीं ठिकाना न था। कौड़ी-कौड़ी को मुहताज, न कहीं घर, न बार। कई-कई दिन फाके से गुज़र जाते। अपनी तो ख़ैर उन्हें ज़रा भी फ़िक्र न थी लेकिन बीवी थी, दो-तीन बच्चे थे, उनके लिए तो कोई-न-कोई फ़िक्र करनी

पड़ती थी। कुनबे का साथ और यह बेसरोसामानी, बड़ा दर्दनाक दृश्य था। शहर से बाहर एक पेड़ की छांह में यह आदमी अपनी मुसीबत के दिन काट रहा था। सारे दिन बाज़ारों की ख़ाक छानता। आह, मैंने एक बार उस रेलवे स्टेशन पर देखा। उसके सिर पर एक भारी बोझ था। उसका नाज़ुक, सुख-सुविधा में पला हुआ शरीर, पसीना-पसीना हो रहा था। पैर मुश्किल से उठते थे। दम फूल रहा था लेकिन चेहरे से मर्दाना हिम्मत और मज़बूत इरादे की रोशनी टपकती थी। चेहरे से पूर्ण संतोष झलक रहा था। उसके चेहरे पर ऐसा इत्मीनान था कि जैसे यही उसका बाप-दादों का पेशा है। मैं हैरत से उसका मुंह ताकता रह गया। दुख में हमदर्दी दिखलाने की हिम्मत न हुई। कई महीने तक यही कैफ़ियत रही। आख़िरकार उसकी हिम्मत और सहनशक्ति उसे इस कठिन दुर्गम घाटी से बाहर निकाल लाई।

थोड़े ही दिनों के बाद मुसीबतों ने फिर उस पर हमला किया। ईश्वर ऐसा दिन दुश्मन को भी न दिखलाये। मैं एक महीने के लिए बम्बई चला गया था, वहां से लौटकर उससे मिलने गया। आह, वह दृश्य याद करके आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। और दिल डर से कांप उठता है। सुबह का वक़्त था। मैंने दरवाज़े पर आवाज़ दी और हमेशा की तरह बेतकल्लुफ़ अन्दर चला गया, मगर वहां साईं दयाल का वह हंसमुख चेहरा, जिस पर मर्दाना हिम्मत की ताज़गी झलकती थी, नज़र न आया। मैं एक महीने के बाद उनके घर जाऊं और वह आंखों से रोते लेकिन होंठों से हंसते दौड़कर मेरे गले लिपट न जाए! ज़रूर कोई आफ़त है। उसकी बीवी सिर झुकाए आयी और मुझे उसके कमरे में ले गयी। मेरा दिल बैठ गया। साईं दयाल एक चारपाई पर मैले-

कहानी एक ऐसे व्यक्ति की जो अपने ऊपर आई हर विपत्ति या कष्ट को अपने कर्मों का फल मानता है...जिसे न ईश्वर से शिकायत है न किसी व्यक्ति विशेष से...



कुचैले कपड़े लपेटे, आंखें बन्द किये, पड़ा दर्द से कराह रहा था। जिस्म और बिछौने पर मक्खियों के गुच्छे बैठे हुए थे। आहट पाते ही उसने मेरी तरफ़ देखा। मेरे जिगर के टुकड़े हो गये। हड्डियों का ढांचा रह गया था। दुर्बलता की इससे ज़्यादा सच्ची और करुणा तस्वीर नहीं हो सकती। उसकी बीवी ने मेरी तरफ़ निराशा भरी आंखों से देखा। मेरे आंसू भर आये। उस सिमटे हुए ढांचे में बीमारी को भी मुश्किल से जगह मिलती होगी, ज़िंदगी का क्या ज़िक्र! आख़िर मैंने धीरे पुकारा। आवाज़ सुनते ही वह बड़ी-बड़ी आंखें खुल गयीं लेकिन उनमें पीड़ा और शोक के आंसू न थे, सन्तोष और ईश्वर पर भरोसे की रोशनी थी और वह पीला चेहरा! आह, वह गम्भीर संतोष का मौन चित्र, वह संतोषमय संकल्प की सजीव स्मृति। उसके पीलेपन में मर्दाना हिम्मत की लाली झलकती थी। मैं उसकी सूरत देखकर घबरा गया। क्या यह बुझते हुए चिराग़ की आख़िरी झलक तो नहीं है?

मेरी सहमी हुई सूरत देखकर वह मुस्कराया और बहुत धीमी आवाज़ में बोला—तुम ऐसे उदास क्यों हो, यह सब मेरे कर्मों का फल है।

मगर कुछ अजब बदक़िस्मत आदमी था। मुसीबतों को उससे कुछ ख़ास मुहब्बत थी। किसे उम्मीद थी कि वह उस प्राणघातक रोग से मुक्ति पायेगा। डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। मौत के मुंह से निकल आया। अगर भविष्य का ज़रा भी ज्ञान होता तो सबसे पहले मैं उसे ज़हर दे देता। आह, उस शोकपूर्ण घटना को याद करके कलेजा मुंह को आता है। धिक्कार है इस ज़िन्दगी पर कि बाप अपनी आंखों से अपने इकलौते बेटे का शोक देखे।

कैसा हंसमुख, कैसा ख़ूबसूरत, होनहार लड़का था, कैसा सुशील, कैसा मधुरभाषी, ज़ालिम मौत ने उसे छांट लिया। प्लेग की दुहाई मची हुई थी। शाम को गिल्टी निकली और सुबह को—कैसी मनहूस, अशुभ सुबह थी—वह ज़िन्दगी सबेरे के चिराग़ की तरह बुझ गयी। मैं उस वक़्त उस बच्चे के पास बैठा हुआ था और साईं दयाल दीवार का सहारा लिए हुए ख़ामोश आसमान की तरफ़ देखता था। मेरी और उसकी आंखों के सामने ज़ालिम और बेरहम मौत ने उस बच्चे को हमारी गोद से छीन लिया। मैं रोते हुए साईं दयाल के

गले से लिपट गया। सारे घर में कोहराम मचा हुआ था। बेचारी मां पछाड़ें खा रही थी, बहनें दौड़-दौड़कर भाई की लाश से लिपटती थीं। और ज़रा देर के लिए ईर्ष्या ने भी संवेदना के आगे सिर झुका दिया था—मुहल्ले की औरतों को आंसू बहाने के लिए दिल पर ज़ोर डालने की ज़रूरत न थी।

जब मेरे आंसू थमे तो मैंने साईं दयाल की तरफ़ देखा। आंखों में तो आंसू भरे हुए थे—आह, संतोष का आंखों पर कोई बस नहीं, लेकिन चेहरे पर मर्दाना दृढ़ता और समर्पण का रंग स्पष्ट था। इस दुख की बाढ़ और तूफानों में भी शांति की नैया उसके दिल को डूबने से बचाये हुए थी।

इस दृश्य ने मुझे चकित नहीं स्तंभित कर दिया। सम्भावनाओं की सीमाएं कितनी ही व्यापक हों ऐसी हृदय-द्रावक स्थिति में होश-हवास और इत्मीनान को क़ायम रखना उन सीमाओं से परे है। लेकिन इस दृष्टि से साईं दयाल मानव नहीं, अति-मानव था। मैंने रोते हुए कहा—भाई साहब, अब संतोष की परीक्षा का अवसर है। उसने दृढ़ता से उत्तर दिया—हां, यह कर्मों का फल है।

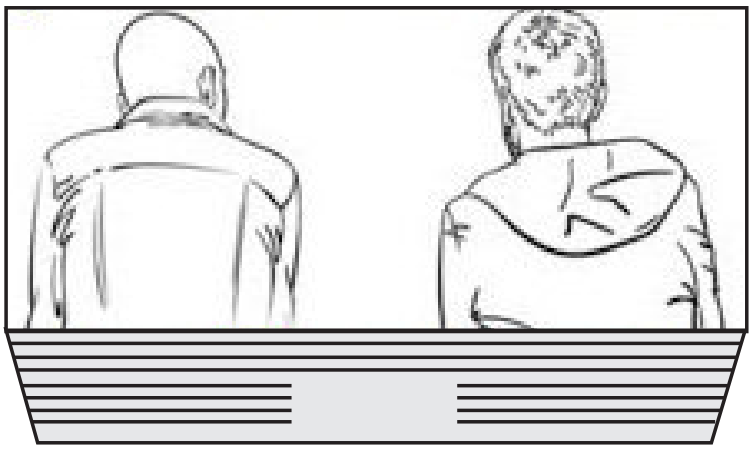

मैं एक बार फिर भौंचक होकर उसका मुंह ताकने लगा।

लेकिन साईं दयाल का यह तपस्वियों जैसा धैर्य और ईश्वरेच्छा पर भरोसा अपनी आंखों से देखने पर भी मेरे दिल में संदेह बाक़ी थे। मुमकिन है, जब तक चोट ताज़ी है सब्र का बांध क़ायम रहे। लेकिन उसकी बुनियादें हिल गयी हैं, उसमें दरारें पड़ गई हैं। वह अब ज़्यादा देर तक दुख और शोक की नज़रों का मुक़ाबला नहीं कर सकता।

क्या संसार की कोई दुर्घटना इतनी हृदयद्रावक, इतनी निर्मम, इतनी कठोर हो सकता है! लेकिन मेरा अनुमान ग़लत निकला। साईं दयाल ने धीरज को हाथ से न जाने दिया। वह बदस्तूर ज़िन्दगी के कामों में लग गया। दोस्तों की मुलाक़ातें और नदी के किनारे की सैर और तफ़रीह और मेलों की चहल-पहल, इन दिलचस्पियों में उसके दिल को खींचने की ताक़त अब भी बाक़ी थी। मैं उसकी एक-एक क्रिया को, एक-एक बात को ग़ौर से देखता और पढ़ता। मैंने दोस्ती के नियम-क़ायदों को भुलाकर उसे उस हालत में देखा जहां उसके विचारों के सिवा और कोई न था। लेकिन उस हालत में भी उसके चेहरे पर वही पुरुषोचित धैर्य था और शिकवे-शिकायत का एक शब्द भी उसकी ज़बान पर नहीं आया।

इसी बीच मेरी छोटी लड़की चन्द्रमुखी निमोनिया की भेंट चढ़ गयी। दिन के धंधे से फ़ुरसत पाकर जब मैं घर पर आता और उसे प्यार से गोद में उठा लेता तो मेरे हृदय को जो आनन्द और आत्मिक शक्ति मिलती थी, उसे शब्दों में नहीं व्यक्त कर सकता। उसकी अदाएं सिर्फ़ दिल को लुभाने वाली नहीं ग़म को भुलाने वाली हैं। जिस वक़्त वह हुमक कर मेरी गोद में आती तो मुझे तीनों लोक की संपत्ति मिल जाती थी। उसकी शरारतें कितनी मनमोहक थीं। अब हुक्के में मज़ा नहीं रहा, कोई चिलम को गिराने वाला नहीं! खाने में मज़ा नहीं आता, कोई थाली के पास बैठा हुआ उस पर हमला करने वाला नहीं! मैं उसकी लाश को गोद में लिये बिलख-बिलख कर रो रहा था। यही जी चाहता था कि अपनी ज़िन्दगी का ख़ात्मा कर दूं। यकायक मैंने साईं दयाल को आते देखा। मैंने फ़ौरन आंसू पोंछ डाले और उस नन्हीं-सी जान को ज़मीन पर लिटाकर बाहर निकल आया। उस धैर्य और संतोष के देवता ने मेरी तरफ़ संवेदनशील की आंखों से देखा और मेरे गले से लिपटकर रोने लगा। मैंने कभी उसे इस तरह चीखें मारकर रोते नहीं देखा। रोते-रोते उसी हिचकियां बंध गयीं, बेचैनी से बेसुध और बेहार हो गया। यह वही आदमी है जिसका इकलौता बेटा मरा और माथे पर बल नहीं आया। यह कायापलट क्यों?

इस शोक पूर्ण घटना के कई दिन बाद जबकि दुखी दिल संभलने लगा, एक रोज़ हम दोनों नदी की सैर को गये। शाम का वक़्त था। नदी कहीं सुनहरी, कहीं नीली, कहीं काली, किसी थके हुए मुसाफ़िर की तरह धीरे-धीरे बह रही थी। हम दूर जाकर एक टीले पर बैठ गये लेकिन बातचीत करने को जी न चाहता था। नदी के मौन प्रवाह ने हमको भी अपने विचारों में डुबो दिया। नदी की लहरें विचारों की लहरों को पैदा कर देती हैं। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि प्यारी चन्द्रमुखी लहरों की गोद में बैठी

मुस्कुरा रही है। मैं चौंक पड़ा और अपने आंसुओं को छिपाने के लिए नदी में मुंह धोने लगा। साईं दयाल ने कहा—भाई साहब, दिल को मज़बूत करो। इस तरह कुढ़ोगे तो ज़रूर बीमार हो जाओगे।

मैंने जवाब दिया—ईश्वर ने जितना संयम तुम्हें दिया है, उसमें से थोड़ा-सा मुझे भी दे दो, मेरे दिल में इतनी ताक़त कहां।

साईं दयाल मुस्करा कर मेरी तरफ़ ताकने लगे।

मैंने उसी सिलसिले में कहा—किताबों में तो दृढ़ता और संतोष की बहुत-सी कहानियां पढ़ी हैं मगर सच मानो कि तुम जैसा दृढ़, कठिनाइयों में सीधा खड़ा रहने वाला आदमी आज तक मेरी नज़र से नहीं गुज़रा। तुम जानते हो कि मुझे मानव स्वभाव के अध्ययन का हमेशा से शौक़ है लेकिन मेरे अनुभव में तुम अपनी तरह के अकेले आदमी हो। मैं यह न मानूंगा कि तुम्हारे दिल में दर्द और घुलावट नहीं है। उसे मैं अपनी आंखों से देख चुका हूं। फिर इस ज्ञानियों जैसे संतोष और शांति का रहस्य तुमने कहां छिपा रक्खा है? तुम्हें इस समय यह रहस्य मुझ से कहना पड़ेगा। साईं दयाल कुछ सोच-विचार में पड़ गया और ज़मीन की तरफ़ ताक़ते हुए बोला—यह कोई रहस्य नहीं, मेरे कर्मों का फल है।

यह वाक्य मैंने चौथी बार उसकी ज़बान से सुना और बोला—जिन, कर्मों का फल ऐसा शक्तिदायक है, उन कर्मों की मुझे भी कुछ दीक्षा दो। मैं ऐसे फलों से क्यों वंचित रहूं।

साईं दयाल ने व्याथापूर्ण स्वर में कहा—ईश्वर न करे कि तुम ऐसा कर्म करो और तुम्हारी ज़िन्दगी पर उसका काला दाग़ लगे। मैंने जो कुछ किया है, व मुझे ऐसा लज्जाजनक और ऐसा घृणित मालूम होता है कि उसकी मुझे जो कुछ सज़ा मिले, मैं उसे ख़ुशी के साथ झेलने को तैयार हूं। आह! मैंने एक ऐसे पवित्र ख़ानदान को, जहां मेरा विश्वास और मेरी प्रतिष्ठा थी, अपनी वासनाओं की गन्दगी में लिथेड़ा और एक ऐसे पवित्र हृदय को जिसमें मुहब्बत का दर्द था, जो सौन्दर्य-वाटिका की एक अनोखी-नयी खिली हुई कली थी, और सच्चाई थी, उस पवित्र हृदय में मैंने पाप और विश्वासघात का बीज हमेशा के लिए बो दिया। यह पाप है जो मुझ से हुआ है और उसका पल्ला उन मुसीबतों से बहुत भारी है जो मेरे ऊपर अब तक पड़ी हैं या आगे चलकर पड़ेंगी। कोई सज़ा, कोई दुख, कोई क्षति उसका प्रायश्चित नहीं कर सकती।

थोड़े ही दिनों के बाद मुसीबतों ने फिर उस पर हमला किया। ईश्वर ऐसा दिन दुश्मन को भी न दिखलाये। मैं एक महीने के लिए बम्बई चला गया था, वहाँ से लौटकर उससे मिलने गया। आह, वह दृश्य याद करके आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ओर दिल डर से काँप उठता है। सुबह का वक्त था। मैंने दरवाजे पर आवाज दी और हमेशा की तरह बेतकल्लुफ अन्दर चला गया, मगर वहाँ साईं दयाल का वह हँसमुख चेहरा, जिस पर मर्दाना हिम्मत की ताजगी झलकती थी, नजर न आया। मैं एक महीने के बाद उनके घर जाऊँ और वह आँखों से रोते लेकिन होंठों से हँसते दौड़कर मेरे गले लिपट न जाय! जरुर कोई आफत है।

मैंने सपने में भी न सोचा था कि साईं दयाल अपने विश्वासों में इतना दृढ़ है। पाप हर आदमी से होते हैं, हमारा मानव जीवन पापों की एक लम्बी सूची है, लेकिन कितने ऐसे आदमी हैं जो अपने कर्मों की सज़ाओं को इस तरह उदारतापूर्वक मुस्कराते हुए झेलने के लिए तैयार हों। हम आग में कूदते हैं, लेकिन जलने के लिए तैयार नहीं होते।

मैं साईं दयाल को हमेशा इज़्ज़त की निगाह से देखता हूं, इन बातों को सुनकर मेरी नज़रों में उसकी इज़्ज़त तिगुनी हो गयी। एक मामूली दुनियादार आदमी के सीने में एक फ़क़ीर का दिल छिपा हुआ था जिसमें ज्ञान की ज्योति चमकती थी। मैंने उसकी तरफ़ श्रद्धापूर्ण आंखों से देखा और उसके गले से लिपटकर बोला—साईंदयाल, अब तक मैं तुम्हें एक दृढ़ स्वभाव का आदमी समझता था, लेकिन आज मालूम हुआ कि तुम उन पवित्र आत्माओं में हो, जिनका अस्तित्व संसार के लिए वरदान है। तुम ईश्वर के सच्चे भक्त हो। ■■

कान्ति मासिक के अगस्त-2023 अंक की कहानी (छुट्टी का एक दिन) हमारी मर्यादा और नीतियों के विपरीत भ्रम एवं भूलवश प्रकाशित हो गई है। जिसके लिए हम अपने पाठकों से क्षमा प्रार्थी हैं।

–संपादन प्रभाग
'कान्ति मासिक'

लघुकथा



ख़लील जिब्रान

ज्ञानियों की गति

चार मेंढक नदी किनारे एक लट्ठे पर बैठे थे। अचानक लट्ठा धारा में आ गया और धीरे-धीरे बहने लगा। मेढक ख़ुश हो गए और लट्ठे के साथ तैरने लगे। इससे पहले उन्होंने कभी भी नांव की सवारी नहीं की थी।

कुछ दूरी पर पहला मेंढक बोला–'यह वास्तव में ही बहुत चमत्कारी लट्ठा है। ऐसे तैर रहा है जैसे ज़िन्दा हो! ऐसा लट्ठा पहले कभी नहीं सुना।'

दूसरे मेंढक ने कहा–'नहीं मेरे दोस्त, है तो यह दूसरे लट्ठों जैसा ही। चल यह नहीं रहा है। दरअस्ल, यह नदी है न, समुद्र की ओर जा रही है। हमें और लट्ठे को यह अपने साथ बहाए ले जा रही है।'

तीसरा मेंढक बोला–'भाई, गति न तो लट्ठे में है और न नदी में। गति हमारे विचारों में है। बिना विचार के कुछ भी गतिशील नहीं होता।'

अब, तीनों मेंढक इस बात पर झगड़ने लगे कि गति वास्तव में किसमें है? लड़ाई तेज़ से तेज़तर होती गई लेकिन सहमति नहीं बन पाई। फिर वे चौथे मेंढक की ओर मुड़े। वह अब तक चुपचाप उनकी बातें सुन रहा था। उन्होंने उससे उसकी राय पूछी।

चौथा मेंढक बोला–'तुममें से किसी की भी बात ग़लत नहीं है–गति लट्ठे में, जल में और विचारों में–सब में है।'

उसकी बात पर तीनों मेंढक बहुत नाराज़ हो गए, क्योंकि उनमें से किसी को भी यह बर्दाश्त नहीं था कि उसकी बात पूरी तरह सही नहीं है और यह कि बाक़ी दोनों की बात पूरी तरह ग़लत नहीं है।

फिर एक अजीब बात हुई। तीनों मेंढक एकजुट हो गए और चौथे मेंढक को उन्होंने लट्ठे पर से धक्का दे दिया।



दया सागर

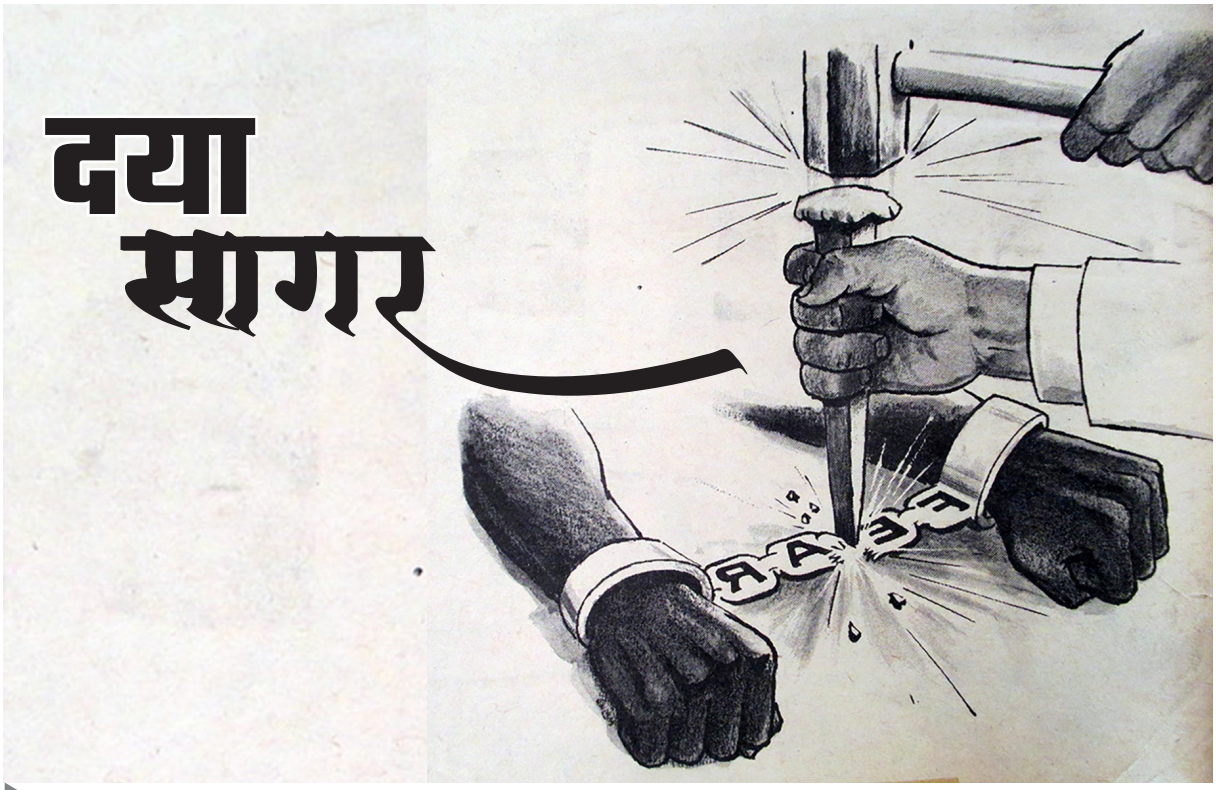

आख़िरी पन्ना



संपादन प्रभाग

मानव-जीवन को कल्याण और भलाई के मार्ग पर डालने के लिए एक आदर्श चाहिए। आदर्श वास्तव में मापदंड (Standard) का काम करता है, जिस पर नाप-तौल कर यह पता लगाया जाता है कि किसी व्यक्ति के व्यवहार का कितना भाग खरा है और कितना खोटा। मापदंड या आदर्श काल्पनिक भी होते हैं, जो क़िस्से-कहानी के रूप में उपदेशों में बयान किए जाते हैं और उसे सुनकर लोग ख़ुश होते हैं, लेकिन उसका कोई वास्तविक लाभ व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन में नहीं होता।

आदर्श होने के लिए सिर्फ़ इतना ही ज़रूरी नहीं है कि वह संभव और व्यावहारिक हो, बल्कि यह भी ज़रूरी है कि वह आदर्श किसी का जीवन बन चुका हो और उसने उस पर चलकर आदर्श और व्यावहारिक नमूना पेश किया हो। उस व्यक्ति के हृदय में मानव के प्रति इतना प्रेम हो कि हर कोई उसे अपना शुभचिंतक समझने लगे। उसके प्रेम में डूब कर उसके आदर्श को अपनाने के लिए दीवाना हो जाए। इसके लिए वह धन और दौलत लुटाने ही को तैयार न हो बल्कि जीवन भी बलिदान करने के लिए तत्पर हो जाए।

इतिहास में ऐसे अनगिनत महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपना सब कुछ मानवता के उत्थान और मुक्ति के लिए बलिदान किया है। मानव का सही मार्गदर्शन किया है। उन सब पर ईश्वर की अपार कृपा हो, दुनिया के किसी कोने में, इतिहास के किसी भी काल में और मानव समुदाय की किसी भी जाति में उनका जन्म हुआ हो हम उन्हें सलाम करते हैं और अपनी हार्दिक श्रद्धा उनको अर्पित करते हैं। वह सभी हमारे आदर्श पुरुष हैं।

लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि कालांतर में उनकी जीवनी

और उनकी शिक्षाएं सुरक्षित नहीं रह सकीं। कुछ ऐसे प्रमाण अवशेष हैं जिनसे हमें मालूम होता है कि वे महान और आदर्श पुरुष थे, अफ़सोस कि उनके जीवन के आकार-प्रकार और उनकी शिक्षाओं की विस्तृत जानकारी के लिए हमारे पास कोई प्रामाणिक साधन नहीं है। यह ईश्वर की बड़ी कृपा है कि इन महान विभूतियों में एक महान व्यक्ति का पूरा जीवन इतिहास के प्रकाश में

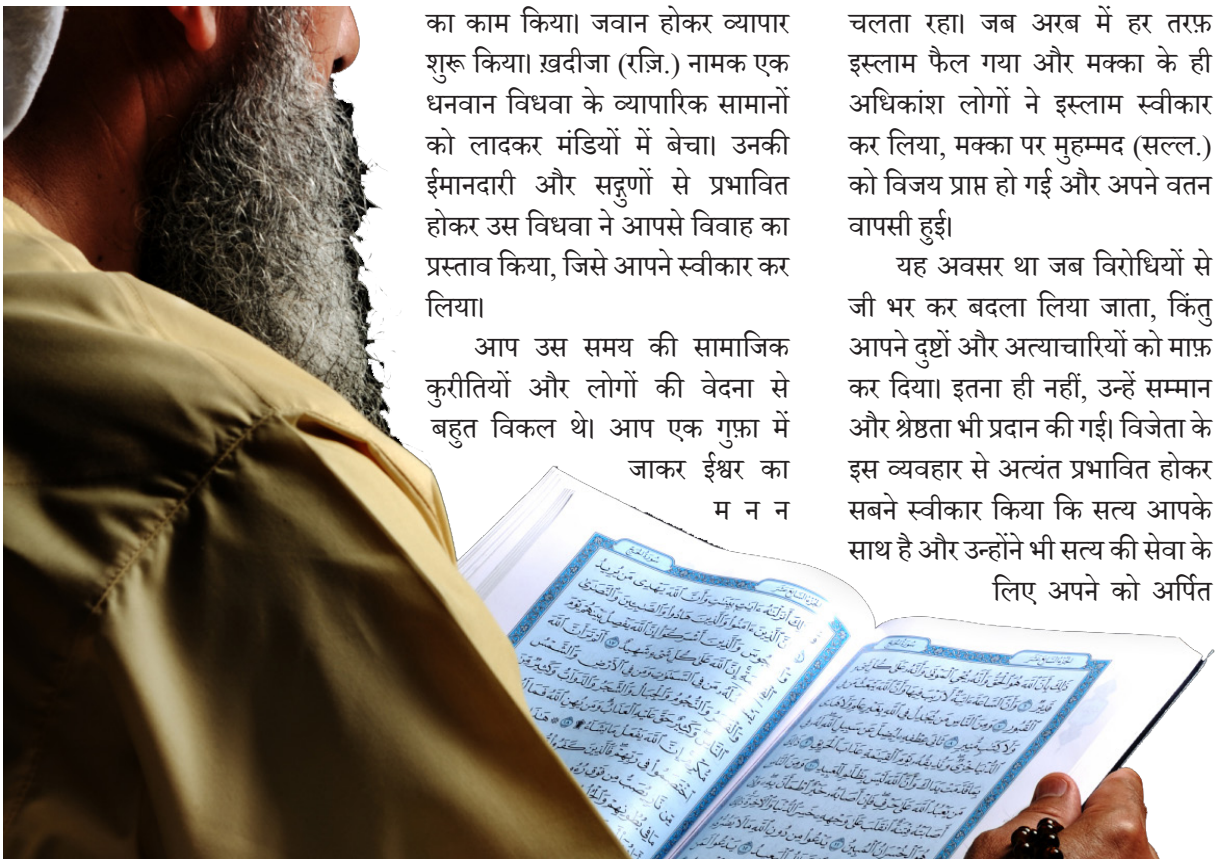

है। उसके जीवन और शिक्षाओं के बारे में हम जो कुछ जानना चाहें, सब मालूम कर सकते हैं। कहीं अटकल और अनुमान से काम लेने की ज़रूरत नहीं। निजी जीवन, सामाजिक जीवन और राजनीतिक जीवन भी, सब प्रकाश में है। यह प्रकाशपुंज समस्त मानव जाति की अमूल्य धरोहर है। यह व्यक्तित्व है पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) का।

मुहम्मद (सल्ल.) सन 571 ई. में अरब के मक्का नगर में पैदा हुए। जन्म से पूर्व ही पिता का देहांत हो गया। बचपन में ही थोड़े-थोड़े अंतराल से उनकी माता और दादा का भी देहांत हो गया। चाचा ने उनका पालन-पोषण किया। बचपन ही से उनके स्वभाव में ऐसी विनम्रता थी कि पूरे परिवार और नगर के लोग उनका आदर करते थे। उनकी सच्चाई और नेकी की चारों तरफ़ चर्चा होने लगी। बचपन में भेड़-बकरी चराने का काम किया। जवान होकर व्यापार शुरू किया। ख़दीजा (रज़ि.) नामक एक धनवान विधवा के व्यापारिक सामानों को लादकर मंडियों में बेचा। उनकी ईमानदारी और सद्गुणों से प्रभावित होकर उस विधवा ने आपसे विवाह का प्रस्ताव किया, जिसे आपने स्वीकार कर लिया।

आप उस समय की सामाजिक कुरीतियों और लोगों की वेदना से बहुत विकल थे। आप एक गुफ़ा में जाकर ईश्वर का मनन और समाज को उबारने के लिए प्रार्थना करने लगे। अंततः उन्हें ईश्वर की प्रकाशना हुई। आप पर मानव जाति के मार्गदर्शन का भारी भार ईश्वर की ओर से डाला गया। ईश्वर ने मानव कल्याण के लिए उन पर "क़ुरआन" अवतरित किया। ईश्वर के आदेश के अनुकूल वे मानव के मार्गदर्शन का काम करते रहे। समाज के स्वार्थी और सत्तावान लोगों ने उनका तीव्र विरोध किया। आपको और आपके साथियों को मक्का के दुष्टों ने घोर यातनाएं दीं। उन्हें देश छोड़ने पर विवश होना पड़ा। दूर मदीना नगर में शरण ली। मक्का वालों ने वहां भी आक्रमण किया। कई युद्ध हुए फिर भी मुहम्मद (सल्ल.) का उनके साथ दयापूर्ण व्यवहार रहा। जब मक्का में अकाल पड़ा तो आपने मदीना से ऊंट पर लादकर ग़ल्ले भिजवाए।

इस्लामी शिक्षा का प्रचार कार्य चलता रहा। जब अरब में हर तरफ़ इस्लाम फैल गया और मक्का के ही अधिकांश लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया, मक्का पर मुहम्मद (सल्ल.) को विजय प्राप्त हो गई और अपने वतन वापसी हुई।

यह अवसर था जब विरोधियों से जी भर कर बदला लिया जाता, किंतु आपने दुष्टों और अत्याचारियों को माफ़ कर दिया। इतना ही नहीं, उन्हें सम्मान और श्रेष्ठता भी प्रदान की गई। विजेता के इस व्यवहार से अत्यंत प्रभावित होकर सबने स्वीकार किया कि सत्य आपके साथ है और उन्होंने भी सत्य की सेवा के लिए अपने को अर्पित कर दिया।

आपके जीवन में ही एक बड़े भूभाग पर सत्य का राज्य स्थापित हो गया। इस राज्य में ग़रीबों, अनाथों और पीड़ितों एवं उपेक्षितों को पूरा सम्मान मिला। मानव-मानव के बीच हर प्रकार के भेदभाव मिट गए। ग़ुलामों (दासों) को भी समाज में सम्मानजनक स्थान मिला। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने ग़ुलामों

को आज़ाद करने को एक बड़ा पुण्य कार्य घोषित किया। मुहम्मद (सल्ल.) ने शिक्षा-दीक्षा का उत्तम प्रबंध किया। स्वयं अत्यंत सादा जीवन व्यतीत करते रहे। दूसरों की सेवा का इतना ध्यान था कि स्वयं न खाते और दूसरों को खिलाते। उनके घर कई-कई दिन चूल्हे न जलते। कुछ खजूरें खाकर पानी पी लेते। चटाई पर सोते। रातों में उठकर देर तक उपासना करते। यह था राज्य के सर्वोच्च अधिकारी का जीवन।

अपने अनुयायियों में भी आपने ऐसे गुण पैदा किया कि वे निस्वार्थ भाव से ईश्वर की प्रसन्नता के लिए सेवा-कार्य में रत रहते। स्वार्थ और सुख भोग से दूर भागते। उन सब लोगों के सम्मिलित प्रयास से देखते ही देखते इस्लाम एशिया, यूरोप और अफ़्रीक़ी के बड़े भू-भागों में फैल गया। गोरे-काले, ऊंच-नीच, निर्बल-बलवान के भेद मिट गए। अज्ञान और अंधकार मिटाने लगा। बुद्धि और विज्ञान को प्रतिष्ठा मिली।

इस्लाम का आदर्श संपूर्ण विश्व में फैल गया। मानवाधिकार, न्याय का राज्य, शांति-स्थापना, सहानुभूति, स्वतंत्रता और संपूर्ण मानव-जाति से भाईचारे इत्यादि का आदर्श उन लोगों को भी स्वीकार करने पड़े जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से इस्लाम को स्वीकार नहीं किया था। इन सिद्धांतों की मौजूदगी में आज संसार में अन्याय और अराजकता फैली हुई है। इसका मूल कारण यही है कि इन शिक्षाओं को दिल से स्वीकार नहीं किया गया है। सिर्फ़ लोगों को धोखा देने के लिए ये दिखावटी आदर्श अपनाए जाते हैं और इसकी आड़ में अपने स्वार्थ की पूर्ति की जाती है।

मुहम्मद (सल्ल.) की जीवन-व्यवस्था का सार यह है कि सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरक शक्ति प्रभु पर ईमान और उससे प्रेम और डर है। वह न्यायपूर्वक मनुष्य के कर्मों का फल देने वाला है। कोई भलाई या बुराई उससे छुपाई नहीं जा सकती। प्रभु-प्रेम में लीन होकर उसकी प्रसन्नता एवं पारितोषिक पाने की अभिलाषा मानव को सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। उसकी कठोर यातना से बचने की चिंता बुराई से रोकती है। सच्ची बात यह है कि ईश्वर में आस्था और पारलौकिक जीवन की धारणा को अपनाये बिना मानव में स्थाई रूप से उत्तम गुणों का आविर्भाव संभव नहीं। आज सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि फिर उन शिक्षाओं को अपनाया जाए जो जीवन को सत्य-मार्ग पर ले जा सकती हैं। इसके बिना मानवता पीड़ाओं और दुखों से मुक्त नहीं हो सकती। ■■

❊ अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो जबकि वो तुम्हें बुलाते हैं उस चीज़ की तरफ जिसमें तुम्हारे लिए ज़िंदगी है। (क़ुरआन) ❊ उस शख़्स से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो अल्लाह की तरफ बुलाये और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ। (क़ुरआन)



हिन्दुस्तान के मशहूर दीनी-इल्मी, फिक्री और म्यारी अख़बार व रसाइल (पत्रिकाओं) का मुताला(अध्ययन)कीजिए

इस सिलसिले में हमारी ख़िदमात हासिल कीजिए :

पेपर – पत्रिका	प्रति कापी	सालाना खरीददारी
✪ कान्ति साप्ताहिक अख़बार	7/-	350/-
✪ कान्ति मासिक पत्रिका	30/-	350/-
✪ दावत उर्दू अख़बार साप्ताहिक	15/-	750/-
✪ जिंदगी–ए–नौ उर्दू महाना	35/-	400/-

सालाना खरीददारी व ग्राहक बनने के लिए राब्ता करें :

मुहम्मद शहज़ाद (उत्तर प्रदेश), मुबाइल : 9808080806

“यक़ीनन घाटे में पड़ गए वे लोग जिन्होंने अपनी औलाद को अज्ञान और मूर्खता के कारण क़त्ल किया और अल्लाह की दी हुई रोज़ी को अल्लाह पर झूठ घड़कर अवैध ठहरा लिया। यक़ीनन वे भटक गए और हरगिज़ वे सीधा मार्ग पाने वालों में से न थे।”

(क़ुरआन, 6:140)





A
Well
Wisher

Jamiatul Banat
Hyderabad

KANTI Monthly, New Delhi
OCTOBER 2023
Posted on 20-21 September 2023
Published on 18 September 2023
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2021-2023
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2021-2023
Total Pages with Cover: 52

"जब अल्लाह
किसी बन्दे से प्रेम करता है
तो वह उसको दुनिया से इस प्रकार
बचाता है जिस प्रकार तुममें से कोई
अपने बीमार को पानी से
परहेज़ कराता है।"
(हदीस : तिरमिज़ी)

A Well Wisher

M RAZA KHAN (KOLKATA)
RAHI RAHMAN (MUMBAI)

